राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक

स्टेटमेन्ट टुडे

RNI No: UPHIN/2016/67528 StatementToday @statement_today

वर्ष 10 अंक 14 लखनऊ, सोमवार 10 अगस्त से 16 अगस्त 2026 पृष्ठ 12 मूल्यः 2.00 रुपये

उप्र की राजधानी लखनऊ से प्रकाशित एवं लखनऊ, गोरखपुर, बुन्देलखण्ड, पटना, सीवान, गोपालगंज, दिल्ली से प्रसारित

फिल्म फ्लॉप हुई तो रोती हुई घर गई सोनाली 3

वार्म-अप मैच से पहले बड़ा झटका 6

ब्रिटिश राज के खिलाफ सबसे बड़ा 9

सीएम योगी ने तिरंगा यात्रा का किया शुभारंभ, बोले...

ऊर्जा का प्रतीक हमारा युवा

लखनऊ,(एजेंसी)। सीएम योगी आदित्यनाथ ने तिरंगा यात्रा का शुभारंभ किया। इस मौके पर सीएम ने कहा कि तिरंगा हमारी आन–बान–शान का प्रतीक है। हमारा युवा ऊर्जा का प्रतीक है। आगे पढ़ें पूरी खबर... राजधानी लखनऊ में रविवार को सीएम योगी आदित्यनाथ ने सरकारी आवास से तिरंगा यात्रा का शुभारंभ किया। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, महामंत्री संगठन धर्मपाल सिंह और दोनों डिप्टी सीएम समेत तमाम मंत्री और संगठन के पदाधिकारी हाथों में तिरंगा लेकर निकले। इसमें तमाम जनप्रतिनिधि, कार्यकर्ता, स्वयंसेवी संगठन, समाजसेवी संस्थाओं के साथ ही बड़ी संख्या में युवा, महिलाएं एवं स्थानीय नागरिक भी शामिल हैं। यात्रा शुरू होने से पहले सीएम योगी ने पंकज चौधरी व यात्रा में शामिल लोगों के साथ सेल्फी ली। इस मौके पर सीएम योगी ने कहा कि यह मौका बहुत खास है, क्योंकि कुछ ही दिनों में, 15 अगस्त को हम अपने देश का 80वां स्वतंत्रता दिवस मनाएंगे। प्रधानमंत्री मोदी ने आपको अपने घरों पर तिरंगा फहराने का अधिकार दिया है। ताकि, झंडे के प्रति सम्मान और शहर घर तिरंगाश के मंत्र को बढ़ावा मिले। झंडा संहिता में बदलाव किए गए ताकि आप इसे अपने घरों पर लगा सकें। उन्होंने कहा कि पहले, कांग्रेस के शासन में घर पर तिरंगा फहराने के लिए लोगों को संघर्ष करना पड़ता था। कोर्ट तक जाना पड़ता था। लेकिन, मोदी ने 140 करोड़ भारतीयों को यह आजादी दी। अब आप हमारे गर्व, सम्मान और गौरव के प्रतीक तिरंगे को अपने घरों पर फहरा सकते हैं। लोकभवन तक जाएगी यात्रा यात्रा में शामिल सभी लोग हाथों में तिरंगा लेकर मां भारती का जयघोष तथा अमर बलिदानियों को नमन करते हुए तिरंगा यात्रा पर आगे बढ़ें। सीएम आवास से शुरू होने वाली यह यात्रा हजरतगंज स्थित लोकभवन तक जाएगी। 15 अगस्त तक चलने वाले इस अभियान के तहत प्रदेश के सभी मंडलों में 10, 11 एवं 12 अगस्त को तिरंगा यात्रा निकलेगी।

बारामती एयरपोर्ट पर प्रशिक्षण विमान दुर्घटनाग्रस्त, टेकऑफ से पहले हुआ हादसा

बारामती,(एजेंसी)। पुणे जिले की बारामती हवाई पट्टी के पास अचानक एक प्रशिक्षण विमान हादसे का शिकार हो गया। घटना के बाद मौके पर पुलिस पहुंची और अब हादसे की वजह पता लगाने में जुटी है। क्या विमान में तकनीकी गड़बड़ी आई थी या इसके पीछे कोई और वजह थी? निजी कंपनी का एक प्रशिक्षण विमान रविवार को महाराष्ट्र के पुणे जिले में बारामती हवाई पट्टी के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गया। हादसे में किसी के हताहत होने की खबर नहीं है।

हादसा दोपहर करीब साढ़े 12 बजे हुआ। पुलिस ने यह जानकारी दी। पुणे के एसपी ने हादसे के बारे में क्या बताया? पुलिस के पुलिस अधीक्षक (एसपी) ने बताया कि प्रशिक्षण अभ्यास के दौरान बारामती हवाई पट्टी में एक विमान (वीटी–एसईएक्स) रनवे से बाहर निकल गया। विमान में कैप्टन चिराग शशिकांत डोइफोडे और कैडेट अभिजीत जुंद्रे सवार थे। वे विमान के चक्कर लगाने और आपात स्थिति में लैंडिंग के अभ्यास कर रहे थे। एसपी ने बताया कि अभ्यास के दौरान विमान पूरी तरह रुक नहीं पाया।

खरगे ने की छात्रों की गूंज कैंपेन की सराहनाः बोले...

राहुल ने मुद्दा उठाया, छात्रों को हुआ फायदा

देहरादून,(एजेंसी)। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने आज रुद्रपुर में अहम बैठक की। इसक बाद उन्होंने राहुल गांधी के छात्रों के गूंज कार्यक्रम को लेकर भी बात की। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे उत्तराखंड के दौरे पर हैं। रुद्रपुर में हुई बैठक के बाद उन्होंने रांची में श्छात्रों की गूंजश कैंपेन और जेपीएससी–जेएसएससी स्वयंसेवकों के विरोध–प्रदर्शन पर कहा कि गांधी देश भर में नौकरी चाहने वालों और छात्रों के संघर्षों को उठाने वाले पहले व्यक्ति थे। राहुल गांधी ने ही सबसे पहले यह मुद्दा उठाया था। वह कोटा गए और इससे जुड़े सभी लोगों से मिले। उसके बाद, इस मुद्दे को असली रफ्तार मिली। छात्रों ने भी अपनी मांगें रखी हैं और अपने हक के लिए लड़ रहे हैं। उन्हें राहुल गांधी के कैंपेन और उनसे मिले प्रोत्साहन से फायदा हुआ है। शनिवार को, गांधी ने श्छात्रों की गूंजश कार्यक्रम को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज तक बढ़ाया। यह कैंपेन राजस्थान के कोटा में श्छात्रों की गूंज महा रैलीश के साथ शुरू हुआ

और बाद में देहरादून पहुंचा। प्रयागराज में श्छात्रों की गूंजश कार्यक्रम में छात्रों की भारी भीड़ को संबोधित करते हुए, गांधी ने बेरोजगारी की गंभीर सच्चाई को उजागर करते हुए कहा, मैं आपको आंकड़े देता हूं। हर 1000 युवाओं में से केवल 12 को ही पक्की नौकरी मिलती है। इससे पहले, देहरादून में बन्नू स्कूल ग्राउंड में आयोजित कैंपेन के दौरान, गांधी ने आरोप लगाया था कि पिछले दशक में पेपर लीक के कारण लगभग 7.5 करोड़ युवा छात्र प्रभावित हुए हैं। उन्होंने कहा था, षभारत में परीक्षा के पेपर लीक कराने के लिए हाई टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल किया जा रहा है। अगर आपके पास करोड़ों रुपये हैं, तो आप ये पेपर इंटरनेट, टेलीग्राम या सिग्नल पर पा सकते हैं। भारत की शिक्षा व्यवस्था का यही हाल है। उन्होंने दावा किया कि पिछले दशक में ष152 पेपर लीकष हुए हैं और आरोप लगाया कि ऐसे मामलों में दोषी ठहराए जाने की दर शून्य है। गांधी ने कहा था, षपिछले दस वर्षों में 152 बार पेपर लीक हुए हैं।

पाकिस्तान पर हमला हुआ तो लड़ने आएंगे सऊदी-तुर्किये

आखिर क्या है मक्का एग्रीमेंट; भारत कैसे काउंटर करेगा

पाकिस्तान, तुर्किये और सऊदी अरब के बीच हुए त्रिपक्षीय रक्षा समझौते से पश्चिम एशिया में अमेरिका की रणनीतिक भूमिका काफी कम हो सकती है। पाकिस्तान के कुछ रक्षा विश्लेषकों ने यह बात कही। पश्चिम एशिया में व्याप्त तनाव के मद्देनजर बढ़ती सुरक्षा चिंताओं के बीच तीनों देशों ने शुक्रवार को एक संयुक्त रक्षा समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसके तहत किसी एक देश पर हमले को तीनों देशों पर हमला माना जाएगा। दक्षिण-एशियाईऔर प्रवासी रक्षा विश्लेषक और पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आईएसआई के एक पूर्व प्रमुख के बेटे अब्दुल्ला हमीद गुल ने कहा कि यह समझौता ऐसे समय में हुआ है जब खाड़ी क्षेत्र में अमेरिका के सहयोगी देशों को सुरक्षा मुहैया कराने की अमेरिका की क्षमता को लेकर क्षेत्र में शंकाएं बढ़ रही हैं। गुल ने कहा, 卐खाड़ी देशों में अमेरिका के 27 सैन्य अड्डे थे और उनमें से 17 को अमेरिका-ईरान युद्ध के दौरान ईरान ने तबाह कर दिया। इससे क्षेत्र में ये सवाल उठने लगे कि क्या अमेरिकी वाकई उनकी रक्षा कर सकते हैं। इसी वजह से ऐसे समझौते करने की जरूरत पड़ी।卐 गुल ने कहा कि इस समझौते के साथ ही क्षेत्र में अमेरिका की भूमिका बहुत कम या कहें कि खत्म सी हो जाएगी।卐 गुल ने कहा, 卐कतर और कुवैत भी जल्द ही पाकिस्तान के साथ इसी तरह के समझौतों में शामिल होंगे।卐 उन्होंने कहा कि खाड़ी देशों को आभास हो गया था कि ईरान के बजाय इजराइल उनके लिए बड़ी सुरक्षा चुनौती खड़ी कर सकता है। विदेश मामलों के विशेषज्ञ मोहम्मद मेहदी ने कहा कि इस समझौते ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर

पाकिस्तान की स्थिति को लेकर धारणा बदल दी है। उन्होंने कहा, दुनिया में पाकिस्तान की स्थिति बदल गई है। अब दुनिया पाकिस्तान को पश्चिम एशिया और मध्य एशिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले देश के रूप में देख रही है। तुर्किये के इस तीन देशों के समझौते में शामिल होने से यूरोप में भी पाकिस्तान को अलग नजरिए से देखा जाएगा। सेवानिवृत्त ब्रिगेडियर फारूक हमीद ने कहा कि इस समझौते में यह प्रावधान है कि किसी एक सदस्य देश पर हमला तीनों देशों पर हमला माना जाएगा, लिहाजा पाकिस्तान और भारत के बीच भविष्य में किसी तरह के संघर्ष के विरुद्ध यह प्रावधान 'निवारक' के रूप में काम करेगा।

मोदी ने राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर बुनकरों को किया सलाम, हैंडलूम को बताया आत्मनिर्भर भारत की ताकत

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने शुक्रवार को राष्ट्रीय हथकरघा दिवस के अवसर पर देशवासियों को शुभकामनाएं दीं और देश की सदियों पुरानी हथकरघा परंपरा को नमन करते हुए इस क्षेत्र के विकास और संरक्षण के लिए केंद्र सरकार की प्रतिबद्धता दोहराई और कहा कि हथकरघा क्षेत्र ग्रामीण सशक्तिकरण, महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। प्रधानमंत्री ने सोशल मीडिया मंच श्एक्सश् पर साझा किए गए अपने संदेश में देश के बुनकरों और कारीगरों की सराहना करते हुए कहा कि इनकी पीढ़ियों से चली आ रही कारीगरी, समर्पण और मेहनत ने भारत की समृद्ध वस्त्र परंपरा को जीवंत बनाए रखा है। श्री मोदी ने कहा, ष्आज, राष्ट्रीय हथकरघा दिवस पर, हम भारत की समृद्ध और जीवंत हथकरघा विरासत का जश्न मनाते हैं। हम अपने बुनकरों और कारीगरों के कौशल, रचनात्मकता और समर्पण को भी नमन करते हैं। पीढ़ियों से उन्होंने हमारी परंपराओं को संरक्षित और समृद्ध किया है।ष् प्रधानमंत्री ने हथकरघा क्षेत्र के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा, ष्हमारी सरकार इस क्षेत्र को निरंतर प्रोत्साहन देती रहेगी। हथकरघा उद्योग ग्रामीण सशक्तिकरण, महिला-नेतृत्व वाले विकास और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण का एक महत्वपूर्ण आधार है।ष् स्वदेशी वस्त्रों को बढ़ावा देने में अधिक से अधिक लोगों की भागीदारी को प्रोत्साहित करते हुए, प्रधानमंत्री ने लोगों से सोशल मीडिया पर अपने पसंदीदा हथकरघा उत्पादों को प्रदर्शित करने की अपील की।

सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या बढ़ाने वाले विधेयक पर बवाल क्यों, कानून से कितनी बदलेगी व्यवस्था?

नयी दिल्ली,(एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या बढ़ाने वाले संशोधन विधेयक को संसद की मंजूरी मिल गई है। सरकार का दावा है कि इससे लंबित मामलों के निपटारे में तेजी आएगी, जबकि विपक्ष ने इसे मनी बिल के रूप में लाने और न्यायिक सुधारों की दिशा पर सवाल उठाए हैं। आखिर इस विधेयक से क्या बदलेगा और विवाद क्यों हुआ? संसद ने सुप्रीम कोर्ट (न्यायाधीशों की संख्या) संशोधन विधेयक 2०26 को मंजूरी दे दी है। 3 अगस्त 2०26 को यह विधेयक लोकसभा से पारित हुआ, जबकि 6 अगस्त 2०26 को राज्यसभा ने भी इसे ध्वनिमत से पास कर दिया। अब राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद यह कानून बन जाएगा। इसके तहत सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों की संख्या बढ़ा दी जाएगी। सरकार का कहना है कि इससे लंबित मामलों के निपटारे में तेजी आएगी, लेकिन विपक्ष ने इसे अध्यादेश के जरिए लाने, मनी बिल के रूप में पेश करने और केवल चार जज बढ़ाने से न्याय व्यवस्था में कितना बदलाव आएगा, जैसे कई सवाल उठाए। आइए आसान भाषा में समझते हैं कि यह विधेयक क्या है? इसे लाने की जरूरत क्यों पड़ी? इससे क्या बदलेगा? सरकार का क्या कहना है? इस पर इतना विवाद क्यों हुआ? सुप्रीम कोर्ट (न्यायाधीशों की संख्या) संशोधन विधेयक क्या है? यह विधेयक सुप्रीम कोर्ट (न्यायाधीशों की संख्या) संशोधन विधेयक, 1956 में संशोधन करता है। इसके तहत सुप्रीम कोर्ट में मुख्य न्यायाधीश को छोड़कर न्यायाधीशों की संख्या 33 से बढ़ाकर 37 कर दी जाएगी। यानी अब सुप्रीम कोर्ट में कुल 38 जज (1 मुख्य न्यायाधीश, 37 अन्य न्यायाधीश) होंगे। सरकार का कहना है कि इससे अधिक बेंचें बनाई जा सकेंगी और मामलों की सुनवाई तेजी से हो सकेगी। सुप्रीम कोर्ट में जजों की संख्या पहले कितनी थी? सुप्रीम कोर्ट की स्थापना के समय जजों की संख्या काफी कम थी। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 124(1) में कहा गया है कि भारत में एक मुख्य न्यायाधीश और संसद द्वारा तय की गई संख्या में अन्य न्यायाधीश होंगे। यानी जरूरत के अनुसार संसद कानून बनाकर जजों की संख्या बढ़ा सकती है। इसी प्रावधान के तहत 1सुप्रीम कोर्ट (न्यायाधीशों की संख्या) संशोधन विधेयक बनाया गया। उस समय मुख्य न्यायाधीश को छोड़कर सुप्रीम कोर्ट में अधिकतम 1० जज रखने का प्रावधान था।

नारायण साई को सुप्रीम कोर्ट से झटका, उम्रकैद पर रोक लगाने से सर्वोच्च अदालत का इनकार

नई दिल्ली,(एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने दुष्कर्म मामले में नारायण साईं की उम्रकैद की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। हालांकि, अदालत ने गुजरात हाईकोर्ट को निर्देश दिया कि वह उसकी दोषसिद्धि के खिलाफ लंबित अपील का निपटारा जल्दी करे। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को स्वयंभू धर्मगुरु आसाराम के बेटे नारायण साईं को 2०13 के दुष्कर्म मामले में मिली उम्रकैद की सजा पर रोक लगाने से इनकार कर दिया। हालांकि, अदालत ने गुजरात हाईकोर्ट से कहा कि वह साईं की दोषसिद्धि के खिलाफलंबित अपील का निपटारा तीन महीने के भीतर करने का प्रयास करे। न्यायमूर्ति एम.एम. सुंदरेश और न्यायमूर्ति पी.बी. वराले की पीठ ने कहा,श्हम हाईकोर्ट से अनुरोध करते हैं कि वह तीन महीने के भीतर अपील का निपटारा करने का प्रयास करे। हम यह भी स्पष्ट करते हैं कि याचिकाकर्ता और राज्य सरकार दोनों इस प्रक्रिया में पूरा सहयोग करेंगे।श् साईं की ओर से सुप्रीम कोर्ट में क्या दलील दी गई? नारायण साईं की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एन. हरिहरन ने अदालत को बताया कि शीघ्र सुनवाई के लिए आवेदन देने के बावजूद उसकी अपील पर अब तक सुनवाई शुरू नहीं हुई है।

सांसद बर्क ने आयोग की रिपोर्ट पर उठाए सवाल, कहा- जान हमारी गई, अपराधी भी हम ही साबित हो रहे

संभल,(एजेंसी)। सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क, मोहिबुल्ला नदवी और विधायक इकबाल महमूद ने संभल बवाल की न्यायिक जांच रिपोर्ट पर सवाल उठाए। उन्होंने पुलिस की भूमिका पर भी गंभीर आरोप लगाए। सांसद एवं सपा नेता जियाउर्रहमान बर्क ने संभल बवाल में न्यायिक जांच आयोग की रिपोर्ट और पुलिस की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि बवाल में जान हमारी गई और अपराधी भी हम ही साबित हो रहे हैं। बोले, न्यायिक जांच आयोग के गठन पर उम्मीद थी कि संभल के लोगों को न्याय मिलेगा लेकिन यह उम्मीद भी टूट गई। सांसद ने कहा कि भाजपा सरकार में जो भी न्यायिक जांच आयोग गठित किए जाते हैं, वह इसी तरह की गलत रिपोर्ट तैयार देते हैं। बृहस्पतिवार को संभल में दीपा सराय स्थित अपने आवास पर सांसद बर्क ने मीडिया से बातचीत की। इस दौरान उन्होंने कहा कि तब पुलिस ने गोली चलाई थी। हमारे पांच निहत्थे भाइयों की जान ली गई थी। यह जुल्म की इंतेहा है। सौ से ज्यादा निर्दोष लोग जेल भेजे गए। इन लोगों के घरों में दूसरा कोई खाने कमाने वाला तक नहीं है। पुलिस पर सवाल उठाते हुए उन्होंने

कहा कि प्रशासन के साथ बवाल के दिन भी पूरा सिस्टम था। ड्रोन से वीडियो बन रही थी। इसके बाद भी अब तक पुलिस-प्रशासन द्वारा कोई फोटो या वीडियो ऐसा नहीं दिखाया गया है, जिसमें आम लोगों के हाथ में हथियार दिख रहा हो या कोई गोली चला रहा हो। आम लोगों के हाथ में कोई हथियार नहीं था। इसके बाद भी हमारे लोगों को ही अपराधी बना दिया गया। यह जुल्म की इंतेहा है। रामपुर के सांसद बोले, राजनीतिक रंजिश में शामिल किए नेताओं के नाम संभल। रामपुर के सांसद एवं सपा नेता मोहिबुल्ला नदवी ने कहा है कि सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क और विधायक इकबाल महमूद के बेटे सुहेल इकबाल का नाम राजनीतिक रंजिश में शामिल किया गया है। नदवी ने बृहस्पतिवार को दिल्ली में मीडिया से बातचीत की, जो सोशल मीडिया पर वायरल हो रही है। अपने बयान में उन्होंने कहा कि संभल बवाल में पुलिस ने जो गोली चलाई थी, उसमें पांच लोगों की जान गई थी। जनप्रतिनिधियों का काम लोगों को राह दिखाना होता है किसी को उकसाना नहीं होता है। सेवानिवृत्त लोगों ने सरकार के मन की रिपोर्ट तैयार की: विधायक संभल के विधायक एवं सपा नेता इकबाल महमूद का कहना है कि हम सेवानिवृत्त कर्मचारियों के आयोग को न्यायिक जांच आयोग नहीं मानते हैं।

सफलता कैसी भी हो उसके पीछे हमेशा छिपा हुआ रहता है कड़ा संघर्ष. श्मुसाफिर कैफेश् वेब सीरीज की एक्ट्रेस महिमा मकवाना भी कड़ी मेहनत और लगन के दम पर आज स्टार बन चुकी हैं. बचपन में काफी तंगी झेलने वाली 26 साल की महिमा की एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी. उनकी आर्थिक स्थिति भी ठीक नहीं थी, लेकिन मां के कहने पर वो एक्टिंग फील्ड में आईं. टीवी सीरियल्स के जरिए पहचान बनाई. फिर फिल्मों में भी एंट्री की और अब मुसाफिर कैफे से वो हर किसी के दिल पर राज कर रही हैं. 5 महीने की उम्र में पिता को खोया, चॉल में रहीं महिमा मकवाना का जन्म 5 अगस्त 1999 को मुंबई में हुआ था. जब वो पांच महीने की थी तभी उनके पिता का निधन हो गया था. उनकी मां एक एनजीओ में काम करती थीं. महिमा का बचपन चॉल में बीता है. 9 की उम्र में दिए ऑडिशन, 14 की उम्र में खरीदा घर, मां ने बदल दी श्मुसाफिर कैफेश् की एक्ट्रेस महिमा मकवाना की जिंदगी 9 साल की उम्र में देने लगी थीं ऑडिशन साल 2०21 में रणवीर इलाहाबादिया को दिए इंटरव्यू में महिमा ने बताया था कि उनकी मां एक्ट्रेस बनना चाहती थीं, हालांकि घर की जिम्मेदारियों के चलते वो ऐसा नहीं कर पाईं. ऐसे में कम उम्र में ही महिमा को उनकी मां ने एक्ट्रेस बनने के लिए कह दिया था, जबकि महिमा की एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी. मां की बदौलत और घर के हालात को देखते हुए महिमा ने 9 साल की उम्र में ही ऑडिशन देना शुरू कर दिया था. महिमा ने कहा था, श्मुझे एक्टिंग में कोई दिलचस्पी नहीं थी, मैं मां से कहा भी करती थी. जब मैं 9 साल की थी तो ऑडिशन देने लगी थी. आधे दिन स्कूल जाती थी और फिर बस से ऑडिशन के लिए जाया करती थी और फिर थक-हार कर वापस घर आ जाती थी. मेरे एक्टिंग में आने की सबस बड़ी वजह यही थी कि मैं अपने परिवार को सपोर्ट करना चाहती थी.श् 9 की उम्र में दिए ऑडिशन, 14 की उम्र में खरीदा घर, मां ने बदल दी श्मुसाफिर कैफेश् की एक्ट्रेस महिमा मकवाना की जिंदगी 14 की उम्र में खरीदा पहला घर एक दिन महिमा से उनकी मां ने कहा था कि वो इस दुनिया से जाने से पहले अपना घर खरीदना चाहती हैं. महिमा ने मां के इस सपने को सिर्फ14 साल की उम्र में पूरा कर दिया था. उन्होंने बताया था कि 14 साल की उम्र में मैंने अपना पहला घर मीरा रोड पर खरीदा था. बता दें कि अब महिमा के पास एक और घर है. एक्ट्रेस ने साल 2०25 में मां के जन्मदिन पर मुंबई में अपना दूसरा घर खरीदा था. 9 की उम्र में दिए ऑडिशन, 14 की उम्र में खरीदा घर, मां ने बदल दी श्मुसाफिर कैफेश् की एक्ट्रेस महिमा मकवाना की जिंदगी टीवी शो से बनाई पहचान, बॉलीवुड में भी किया काम साल 2०12 के जी टीवी के शो श्सपने सुहाने लड़कपन केश् से महिमा को खास और बड़ी पहचान मिली थी. इसमें उन्होंने रचना नाम का किरदार निभाया था. इसके पहले उन्होंने बालिका वधू में भी काम किया था. महिमा ने मोहे रंग दे, रिश्तों का चक्रव्यूह, अधूरी कहानी हमारी और शुभारंभ जैसे टीवी सीरियल्स में भी काम किया है. वहीं साल 2०21 में वो सलमान खान और आयुष शर्मा के साथ फिल्म श्अंतिम द फाइनल ट्रुथश् में भी नजर आई थीं. 9 की उम्र में दिए ऑडिशन, 14 की उम्र में खरीदा घर, मां ने बदल दी श्मुसाफिर कैफेश् की एक्ट्रेस महिमा मकवाना की जिंदगी फिलहाल 26 साल की महिमा मकवाना नेटफ्लिक्स की वेब सीरीज मुसाफिर कैफे से दर्शकों का दिल जीत रही हैं. 24 जुलाई को रिलीज हुई इस सीरीज में वो प्रीति नाम के किरदार में नजर आ रही हैं. उनके अभिनय को काफी पसंद कर रहे हैं. छोटे पर्दे से लेकर बड़े पर्दे और अब ओटीटी पर भी वो अपनी छाप छोड़ चुकी हैं. इस सीरीज में उनके साथ बॉलीवुड एक्टर विक्रांत मैसी अहम किरदार में नजर आ रहे हैं. वहीं इसका हिस्सा वेदिका पिंटो, आदिल हुसैन, सादिया सिद्दीकी और राजीव सिद्धार्थ जैसे कलाकार भी हैं. अब हैं करोड़ों की दौलत 9 की उम्र में दिए ऑडिशन, 14 की उम्र में खरीदा घर, मां ने बदल दी श्मुसाफिर कैफेश् की एक्ट्रेस महिमा मकवाना की जिंदगी कभी चॉल में रहने वाली और ऑडिशन के लिए दर-दर भटकने वाली महिमा मकवाना ने कम उम्र में न सर्फबहुत शोहरत कमाई है, बल्कि उन्होंने अच्छी खासी दौलत भी कमा ली है. मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक दो घरों वाली ये एक्ट्रेस अब करीब 1० करोड़ रुपये की सम्पत्ति की मालकिन हैं. मुसाफिर कैफे के लिए एक्ट्रेस ने 2 से 3 करोड़ रूपये के बीच फीस ली है. उनकी कमाई एक्टिंग के अलावा ब्रांड एंडोर्समेंट और सोशल मीडिया के जरिए भी होती है.

फिल्म फ्लॉप हुई तो रोती हुई घर गई सोनाली सहगल

फिल्म श्आर्य भट्ट का जीरोश् खुद पर भरोसा और सपनों के लिए संघर्ष की कहानी है। दैनिक भास्कर से बातचीत में सोनाली सहगल, हिमांश कोहली और डायरेक्टर कमल चंद्रा ने ऐसे अनुभव साझा किए, जब लोगों ने उन पर भरोसा नहीं किया, लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी। सोनाली ने बताया कि एक फिल्म के फ्लॉप होने के बाद वह कार में रोते हुए घर गई थीं। हिमांश ने कहा कि श्यारियांश् के बाद लगातार फिल्में नहीं चलीं तो लगा कि करियर खत्म हो गया। सवालरू फिल्म का संदेश है कि खुद पर भरोसा सबसे जरूरी है। आपकी जिंदगी में ऐसा कब हुआ? जवाबध्सोनाली सहगलरू मेरे अंदर हमेशा आत्मविश्वास था, लेकिन मुझसे ज्यादा भरोसा मेरी मम्मी को था। उन्होंने मेरे मिस इंडिया बनने से पहले ही कहा था कि उनकी बेटी मिस इंडिया बनेगी। लोग हंसते थे, लेकिन उनका विश्वास कभी नहीं डगमगाया। आज मुझे लगता है कि परिवार का एक इंसान भी आप पर पूरा भरोसा करे, तो आधी लड़ाई वहीं जीत जाती है। इसलिए सेल्फ बिलीफके साथ परिवार का भरोसा भी जरूरी है। सवालरू हिमांश, आपके साथ भी ऐसा कुछ हुआ था? जवाबध्हिमांश कोहलीरू बचपन से मुझे फिल्मों का शौक था। जब लोगों से कहता था कि मुझे एक्टर बनना है, तो ज्यादातर लोग सपना छोड़ने की सलाह देते थे। स्कूल में मैंने झूठ बोल दिया कि मैं धारा तेल के विज्ञापन वाला बच्चा हूं। पूरे स्कूल ने भरोसा कर लिया, लेकिन बाद में सच सामने आ गया। इसके बाद मुझे बुलिंग झेलनी पड़ी। सीनियर्स मजाक उड़ाते थे और सजा भी देते थे। तभी मैंने तय किया कि सच में एक्टर बनकर दिखाऊंगा। सवालरू उस घटना ने आपको कितना बदला? जवाबध्हिमांश कोहलीरू उस वक्त बहुत बुरा लगा था, लेकिन आज लगता है कि अगर वह घटना नहीं होती तो शायद मैं इतनी मेहनत नहीं करता। मैंने थिएटर शुरू किया, एक्टिंग सीखी और कई संस्थानों में ट्रेनिंग ली। मेरे माता-पिता ने हर कदम पर साथ दिया। आज पुराने दोस्त कहते हैं, श्यार, तूने सच में अपना सपना पूरा कर लिया।श् सवालरू परिवार का साथ कितना जरूरी रहा? जवाबध्हिमांश कोहलीरू अगर मेरे माता-पिता साथ नहीं देते तो मैं एक्टिंग की पढ़ाई नहीं कर पाता। उन्होंने सिर्फ पढ़ाई नहीं, मेरे सपने पर भी भरोसा किया। वही भरोसा मुझे यहां तक लेकर आया। सवालरू कमल जी, आपकी कहानी भी कुछ ऐसी ही है? जवाबध्कमल चंद्रारू बिल्कुल। मैं इंजीनियर था। अच्छी नौकरी थी, लेकिन एक्टिंग वर्कशॉप के बाद लगा कि मुझे फिल्मों में काम करना है। मैंने चार सरकारी नौकरियां छोड़ दीं। रिश्तेदारों ने मना किया, लेकिन पिता ने कहा, श्तूने मेरा सपना पूरा कर दिया, अब अपना सपना जीओ।श् उसी बात ने मुझे कभी पीछे मुड़कर नहीं देखने दिया। हिमांश कोहली ने बताया कि स्कूल में खुद को टीवी विज्ञापन का कलाकार बता दिया था। झूठ पकड़ा गया, लेकिन उसी घटना ने उन्हें एक्टर बनने की जिद दी। हिमांश कोहली ने बताया कि स्कूल में खुद को टीवी विज्ञापन का कलाकार बता दिया था। झूठ पकड़ा गया, लेकिन उसी घटना ने उन्हें एक्टर बनने की जिद दी। सवालरू हिमांश क्या आप भी अपने माता-पिता का कोई अधूरा सपना भी जी रहे हैं? जवाबध्हिमांश कोहलीरू बिल्कुल। मेरी मां कलाकार बनना चाहती थीं। उन्हें गायन, पेंटिंग और अभिनय का शौक था, लेकिन कम उम्र में शादी होने से उनका सपना अधूरा रह गया। आज फिल्मों में काम करते हुए लगता है कि मैं अपना ही नहीं, मां का सपना भी पूरा कर रहा हूं। उन्होंने एक बार ऋषि कपूर और जितेंद्र से मिलने की इच्छा जताई थी। जब मैं उन्हें दोनों कलाकारों से मिलवा पाया तो लगा कि मेरी मेहनत सफल हो गई। उनके चेहरे की खुशी मेरे लिए किसी अवॉर्ड से कम नहीं थी। सवालरू कमल जी, आपकी जिंदगी का सबसे भावुक पल कौन-सा रहा? जवाबध्कमल चंद्रारू मेरी पहली फिल्म के दौरान महेश भट्ट ने मेरे पिता से फोन पर मेरी तारीफकी थी। फोन कटने के बाद पापा की खुशी देखने लायक थी। उन्होंने कहा, ष्मुझे पता था, मेरा बेटा कुछ अच्छा करेगा।ष् माता-पिता की आंखों में अपने लिए गर्व देखना सबसे बड़ी उपलब्धि होती है। सवालरू श्आर्य भट्ट का जीरोश् की कहानी में ऐसी क्या बात थी, जिसने आपको सबसे ज्यादा प्रभावित किया? जवाबध्हिमांश कोहलीरू मुझे श्बग्गूश् का किरदार बहुत पसंद आया। वह सिखाता है कि जिंदगी मंजिल से भटका सकती है, लेकिन सपना और मेहनत नहीं छोड़ें तो एक दिन मंजिल जरूर मिलती है। हालात जैसे भी हों, उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिए। सवालरू शूटिंग के दौरान सबसे बड़ी सीख क्या मिली? जवाबध्हिमांश कोहलीरू इस फिल्म की सबसे बड़ी ताकत इसकी टीम है। रवि किशन, राजेश शर्मा, गोपाल दत्त, नीरज सूद और बाकी कलाकारों के साथ बातचीत करना एक एक्टिंग स्कूल जैसा था। हर कलाकार अपने संघर्ष और अनुभव साझा करता था। उनसे बहुत कुछ सीखने को मिला। डायरेक्टर कमल चंद्रा ने बताया कि उन्होंने इंजीनियरिंग और सरकारी नौकरियां छोड़कर फिल्मों का रास्ता चुना। परिवार के भरोसे ने उन्हें आगे बढ़ने का हौसला दिया। सवालरू कमल जी, शूटिंग से जुड़ा कोई दिलचस्प किस्सा? जवाबध्कमल चंद्रारू जिस घर में शूटिंग हुई, उसके मालिक बाद में उसे रेनोवेट करने वाले थे। लेकिन फिल्म पूरी होने के बाद उन्होंने फैसला बदल दिया। उन्हें लगा कि यह घर फिल्म की यादों से जुड़ गया है, इसलिए इसे जैसा है, वैसा ही रहने देना चाहिए। यह हमारे लिए बहुत खास पल था। सवालरू फिल्म का सबसे बड़ा संदेश क्या है? जवाबध्कमल चंद्रारू हर इंसान जिंदगी में कभी न कभी खुद को श्जीरोश् महसूस करता है।

संपादकीय........

कॉकरोच अब किस दिशा में बढ़ेंगे

जंतर-मंतर पर पेपर लीक के खिलाफ आंदोलन खत्म हो चुका है और धर्मेन्द्र प्रधान का इस्तीफा भी हो गया है। इस बीच प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की ज्यादती को लेकर सुप्रीम कोर्ट में याचिकाएं दाखिल की गई हैं, जिन पर सुनवाई चल रही है। इस तरह देखा जाए तो कॉकरोच जनता पार्टी ने मोदी सरकार के नुमाइंदों के साथ मिलकर जो समझौता किया था और महीने भर से ऊपर चला आंदोलन खत्म हुआ था, तो अब कॉकरोच जनता पार्टी किस दिशा में आगे बढ़ेगी। क्या वह किसी राजनैतिक दल में तब्दील होगी, या फिर शिक्षा व्यवस्था के जो अनसुलझे सवाल हैं, उन्हें उठाएगी, या उसकी भूमिका बस यहीं तक सीमित थी, ऐसे कई सवालों पर जवाब मिलने अब शुरु हो गए हैं। बुधवार और गुरुवार दो दिनों तक कॉकरोच जनता पार्टी की बैठक चली और अब अभिजीत दिपके ने गुरुवार को अपने अगले कदम के बारे में बताया है। दिपके के मुताबिक सीजेपी अब देश भर में एक नयी मुहिम छेड़ रही है, जिसका नाम होगा श्क्या बोलती पब्लिकश। इस मुहिम की घोषणा करते हुए दिपके ने कहा कि इसका मुख्य उद्देश्य आम लोगों की समस्याओं को समझना और उनके लिए काम करना होगा। बकौल, दिपके इस अभियान का सबसे पहला ध्यान शिक्षा क्षेत्र पर होगा, धीरे-धीरे इसे अन्य मुद्दों पर भी केंद्रित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि शिक्षा पर सबसे पहले ध्यान इसलिए दिया गया है क्योंकि स्कूल, कॉलेज और कोचिंग की बढ़ती फीस की वजह से कई परिवार अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा उपलब्ध नहीं करवा पाते। उन्होंने कहा, देश की शिक्षा व्यवस्था में सुधार हमारा पहला मुद्दा होगा। इस पर हमें काम करना है। हमारा मानना है कि देश में शिक्षा महंगी हो गई है। पहली कक्षा के लिए सालाना फीस 1 लाख रुपए से लेकर 2 लाख रुपए के बीच है। इसके अलावा कई जगह डोनेशन भी चलता है। दिपके ने सवाल उठाया कि देश में लोगों की आय इतनी कम है। आखिर वह कैसे अपने बच्चों को इतनी फीस देकर पढ़ा पाएंगे? कॉलेज और कोचिंगों की महंगी फीस कई परिवारों को कर्ज के जाल में फंसा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कॉकरोच पार्टी छात्रों के और तमाम परिवारों के इस आर्थिक बोझ को कम करना चाहती है। अभिजीत दिपके ने भीम राव अंबेडकर का जिक्र करते हुए कहा कि शिक्षा पर सभी का अधिकार है। शिक्षा को सभी के लिए उपलब्ध होना चाहिए। लेकिन आज के समय में शिक्षा केवल एक मुनाफे का धंधा बन चुकी है। अभिजीत दिपके की ये बातें भारतीय राजनीति के लिए देजा वू पल समान लग रही हैं। फ्रेंच भाषा से लिए गए इस शब्द का अर्थ है पहले से देखा या महसूस किया हुआ। ज्यादा नहीं बस डेढ़ दशक पहले 26 नवंबर 2012 को आम आदमी पार्टी बनी थी। अरविंद केजरीवाल की बनाई यह पार्टी इंडिया अगेंस्ट करप्शन नाम के अभियान से ही निकली थी। आम आदमी पार्टी ने भी जनता पर पकड़ बनाने के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, बिजली, पानी जैसे बुनियादी मुद्दों पर ही जोर दिया। और इसमें कोई संदेह नहीं कि जब दिल्ली में आम आदमी पार्टी की सरकार बनी तो चाहे सरकारी स्कूल हों या मोहल्ला क्लिनिक की अवधारणा इनसे लाखों लोगों की जिंदगी में सहूलियत बढ़ी। दिल्ली के सरकारी स्कूलों में बहुत हद तक आप सरकार ने सुधार किया था। फरवरी 2020 में जब ट्रंप भारत के दौरे पर थे, तो अमेरिका की प्रथम महिला मेलानिया ट्रंप ने एक सरकारी स्कूल का दौरा भी किया था। आम आदमी पार्टी ने अपने गठन के वक्त यही दावा किया था कि वह राजनीति में बदलाव करेगी और मौजूदा चलन से हटकर काम करके दिखाएगी। लेकिन राजनैतिक मजबूरी कहें या महत्वाकांक्षा, आम आदमी पार्टी भी अब उसी रवैये पर चलती है जैसे बाकी राजनैतिक दल। भाजपा के विरोध में आम आदमी पार्टी ने इंडिया गठबंधन का हिस्सा बनना मंजूर किया और उसी कांग्रेस से हाथ मिलाया, जिसकी मुखालफत वो करती रही है। लेकिन अब उसे इस गठबंधन में सहजता महसूस नहीं हुई तो वह अलग भी हो गई है। भविष्य में आम आदमी पार्टी क्या अकेले ही रहेगी या फिर किसी गठबंधन का हिस्सा बनेगी यह कहना कठिन है।

परीक्षा लीक से नहीं, पुरानी 'एकाधिकार व्यवस्था' से लड़ें

एम. मुनीर

भारत ने परीक्षा धोखाधड़ी के खिलाफ जंग छेड़ दी है। पेपर लीक के मामले में अब जेल की अधिक सख्त सजा होगी। संगठित नकल सिंडिकेटों को भारी जुर्माने का सामना करना पड़ेगा। जांच प्रक्रिया तेज होगी। विशेष अदालतें त्वरित न्याय प्रदान करेंगी। संसद ने यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि परीक्षाएं किसी क्राइम थ्रिलर जैसी लगने लगें, तो शायद आपराधिक कानून को इसमें बड़ी भूमिका निभानी चाहिए। लेकिन क्या हो, अगर पेपर लीक बीमारी ही न हो? क्या होगा अगर परीक्षा प्रणाली खुद ही एक बीमारी हो? हर साल, लाखों छात्र अपनी किशोरावस्था एक ऐसी परीक्षा की तैयारी में लगा देते हैं, जो सिर्फ कुछ घंटों तक चलती है लेकिन अगले 40 वर्षों के उनके करियर का मार्ग तय करती है। फिर जब प्रश्नपत्र लीक होता है, तो हम हैरान होने का नाटक करते हैं। अत्यधिक जोखिम वाली प्रणालियां अक्सर बड़े अपराधों को जन्म देती हैं। भारत का कोचिंग उद्योग करियर की चिंता और आशंकाओं पर फलता-फूलता है और यह हमारी प्रवेश प्रणाली के कारण अस्तित्व में है। इसका वार्षिक राजस्व 60,000 करोड़ रुपए अनुमानित है और इसके लगातार बढने की उम्मीद है। परिवार अनिवार्य रूप से एक 'लॉटरी' के लिए प्रति माह 50,000 रुपए से अधिक खर्च करते हैं और कुछ तो इसके लिए ऋण भी लेते हैं। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस (ए.आई.) अब भारत को 1947 के बाद से अपने सबसे मौलिक शैक्षिक सुधारों को लागू करने और देश के परीक्षा दर्शन में संशोधन करने का अवसर देती है। पहला विचार सरल है। इन्फोसिस के चेयरमैन नंदन नीलेकणि की अध्यक्षता वाले पैनल को यह सिफारिश करके शुरुआत करनी चाहिए कि उम्मीदवारों को प्रत्येक प्रतियोगी परीक्षा में कई अवसर दिए जाएं। विशिष्ट संस्थानों में प्रवेश चाहने वाले छात्रों को हर महीने सुरक्षित कम्प्यूटर-आधारित परीक्षाएं देने में सक्षम होना चाहिए और रैंकिंग के लिए उनका सर्वोत्तम स्कोर स्वतरू ही चुन लिया जाना चाहिए। ए.आई. संचालित निगरानी, एन्क्रिप्टेड प्रश्न बैंक और एडाप्टिव टैस्ट प्रोटोकॉल इसे संभव बनाते हैं। बहु-अवसर प्रणाली पेपर लीक के प्रोत्साहन को कम करती है क्योंकि कोई भी एक परीक्षा जीवन का अंतिम और एकमात्र फैसला नहीं होती। दूसरा, एक समान प्रश्नपत्रों को समाप्त करें। प्रत्येक उम्मीदवार को एक सत्यापित और हैक-प्रूफ प्रश्न बैंक से ए.आई. द्वारा यादृच्छिक (रैंडमाइज्ड) रूप से तैयार किए गए अद्वितीय प्रश्न मिलने चाहिएं, जो समान कठिनाई स्तरों के लिए कैलिब्रेट किए गए हों। यदि हर प्रश्नपत्र अलग है, तो लीक हुआ पेपर खरीदना जीतने वाले नंबर के घोषित होने के बाद लॉटरी टिकट चुराने जैसा निरर्थक हो जाएगा। तीसरा, यह नाटक करना बंद करें कि स्मरण शक्ति ही बुद्धिमता है। लार्ज लैंग्वेज मॉडल अनगिनत ज्ञान परीक्षणों में पहले से ही मनुष्यों से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। हमारी परीक्षाओं को तदनुसार विकसित होना चाहिए। छात्रों को स्मार्टफोन पर आसानी से उपलब्ध फॉर्मूले याद करने के लिए कहने की बजाय, इस बात का परीक्षण करें कि वे अपरिचित समस्याओं को कैसे हल करते हैं, ए.आई. जैनरेटेड उत्तरों का मूल्यांकन कैसे करते हैं, मतिभ्रम का पता कैसे लगाते हैं, डाटा की व्याख्या कैसे करते हैं और बुद्धिमान प्रणालियों के साथ जिम्मेदारी से सहयोग कैसे करते हैं। कल का इंजीनियर ए.आई. की दुनिया में काम करेगा और उसे यह पहचानने में सक्षम होना चाहिए कि कहां और कैसे गड़बड़ी हो रही है। चौथा, एक 'अकादमिक क्रैडिट पासपोर्ट' बनाएं। छात्र एक निश्चित समय अवधि में कई परीक्षाओं, परियोजनाओं, इंटर्नशिप, हैकाथॉन, शोध कार्य, सामुदायिक सेवा और व्यावहारिक मूल्यांकनों में अंक जमा करेंगे। इसके बाद विश्वविद्यालय एक दर्दनाक रविवार की सुबह के प्रदर्शन की बजाय छात्र के पूरे पोर्टफोलियो का मूल्यांकन करेंगे। पांचवां, ए.आई. से प्रतिभा की पहचान करने को कहें, न कि केवल नकल पकडने को। परीक्षा प्रणालियां व्यावहारिक डाटा उत्पन्न कर सकती हैं। छात्र कठिन प्रश्नों को कैसे हल करते हैं, वे गलतियों से कितनी जल्दी उबरते हैं और क्या वे लगातार सुधार करते हैं-उदाहरण के लिए, वे कैसे तर्क देते हैं। यदि नैतिक और पारदर्शी तरीके से उपयोग किया जाए, तो ए.आई. लचीलेपन, रचनात्मकता और सीखने की क्षमता की पहचान कर सकता है, जो वास्तव में मायने रखती है। छठा, और यह कोचिंग उद्योग को डरा देगा, विश्वविद्यालयों को अधिक स्वायत्तता दें। हर इंजीनियरिंग कॉलेज के लिए एक जैसे प्रवेश मानदंड क्यों होने चाहिएं? कुछ संस्थान नवाचार पर जोर दे सकते हैं, अन्य उद्यमिता, अनुसंधान क्षमता या व्यावहारिक योग्यता पर। जब हर संस्थान एक ही प्रवेश परीक्षा का उपयोग करता है, तो उसके लिए तैयारी करने का मतलब खुद को एक आम सांचे में ढालना होता है। हालांकि यह एकरूपता पेच बनाने वाले कारखानों के अनुकूल हो सकती है लेकिन यह मानवीय प्रतिभा के विविधीकरण को बढ़ावा नहीं देती, जो आगे चलकर अधिक महत्वपूर्ण होने वाली है। यदि परीक्षाएं साल भर दी जा सकें, हर प्रश्न पत्र अद्वितीय हो, प्रवेश व्यापक मानदंडों द्वारा तय हो, रटने की बजाय तर्क का मूल्यांकन हो और विश्वविद्यालय विविध ताकतों की तलाश करें, तो कोचिंग सैंटरों को एक असाधारण बदलाव से गुजरना होगा। परीक्षा के गुर सिखाने की बजाय, उन्हें वास्तव में पढ़ाना पड़ेगा। धोखाधड़ी विरोधी कानूनों को सख्त करने वाले भारत के संशोधन आवश्यक हैं क्योंकि संगठित पेपर लीक जनता के विश्वास को खतरे में डालते हैं और वे कठोर सजा के हकदार हैं। लेकिन कल की परीक्षा प्रणाली पुलिसिंग के जरिए भविष्य की शिक्षा चुनौती को हल नहीं कर पाएगी। नकलचियों को पकडना और लीक-पेपर बाजार पर नकेल कसना उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना कि एक ऐसी परीक्षा प्रणाली तैयार करना, जो नकल को व्यावसायिक रूप से निरर्थक बना दे, कोचिंग के एकाधिकार को समाप्त कर दे और याद रखने की क्षमता से अधिक जिज्ञासा को मूल्यवान बनाए।

भारत में बढ़ती असमानता और सिकुड़ते अवसर

राजेश पांडेय

भारत को हमेशा चमकीली संभावनाओं का देश माना जाता है। पुराने दौर में उसके लिए सोने की चिड़िया विशेषण का इस्तेमाल होता था। उसमें दुनिया की बड़ी ताकत के बतौर उभरने की क्षमता रही है। लेकिन वर्तमान स्थिति खोए हुए अवसरों की अनंत कथा के रूप में तब्दील हो गई है। पिछले कुछ वर्षों से देश में आर्थिक असमानता तेजी से बढ़ी है। राजनीतिक सत्ता के समान संपत्ति और साधन चंद लोगों के हाथों में सिमट गए हैं। नीतियों और प्राथमिकताओं में कुछ अमीरों को ज्यादा अहमियत मिल रही है। विश्व बैंक के आंकड़े और कई विशेषज्ञों के निष्कर्ष हालात की सही तस्वीर पेश करते हैं। जानकारी छिपाने और तोड़-मरोड़कर तथ्य पेश करने में माहिर सरकार भी कई बार सच बता देती है। भारत ने आजादी के बाद मिश्रित अर्थव्यवस्था का मॉडल अपनाया था। पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की सरकार का झुकाव समाजवाद और पूर्व सोवियत संघ की व्यवस्था की तरफ था। सरकार ने कई उद्योगों की बुनियाद रखी और बड़े बांध बनाए। विशुद्ध पूंजीवाद के पैरोकार कई अर्थशास्त्री देश की अपेक्षाकृत धीमी विकास दर के लिए इस मॉडल को जिम्मेदार मानते हैं। खासतौर से 2014 के बाद तो देश की तमाम समस्याओं का ठीकरा नेहरू के कार्यकाल पर फोड़ने का सिलसिला चल पड़ा है। बहरहाल, पं. नेहरू के दौर में बने एक विराट सार्वजनिक क्षेत्र ने बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर पैदा किए। कुछ नए शहर अस्तित्व में आए, अर्थव्यवस्था को सहारा मिला और अवसरों में आम लोगों की हिस्सेदारी बढ़ी थी। एक बेहद पिछड़े देश ने विकास की दौड़ में बड़े देशों से होड़ करने का सपना देखा था। विकास के नेहरूवादी मॉडल में आगे जाकर कई सरकारों ने बदलाव किए हैं। लेकिन आर्थिक गैरबराबरी नए शिखर स्पर्श कर रही है। यहां हम आय, संपत्ति, उत्पादन के तुलनात्मक आंकड़ों से विकास की वास्तविक स्थिति का काफी हद तक मूल्यांकन कर सकते हैं। पेरिस इकानॉमिक्स स्कूल की विश्व असमानता रिपोर्ट 2026 के मुताबिक भारत में कुछ लोगों के हाथ में संपत्ति और आय के जमा होने का स्तर चरम पर पहुंच गया है। वह दुनिया के सबसे ज्यादा असमान देशों की श्रेणी में आता है। राष्ट्रीय आय के 58 प्रतिशत हिस्से पर टॉप दस प्रतिशत लोगों का कब्जा है। दूसरी ओर सबसे निचली सीढ़ी पर बैठे 50 प्रतिशत लोगों के हिस्से में सिर्फ 15 प्रतिशत आमदनी आई है। कुल राष्ट्रीय आय के 40 प्रतिशत के मालिक एक फीसदी लोग हैं। विश्व बैंक की जुलाई 2026 में जारी एक रिपोर्ट में भारत को निम्न मध्यम आय की अर्थव्यवस्था बताया गया है। यह दर्जा 2009 से चल रहा है। मतलब पिछले 15-16 वर्षों से स्थिति लगभग यथावत है। भारत के महाशक्ति बनने की संभावनाएं वर्षों से जताई जा रही हैं। 2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद तो विश्व गुरु, दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था सहित कई दावे जोर-शोर से किए जा रहे हैं। लेकिन इन दावों पर संदेह बढ़ा है। इंडियन एक्सप्रेस में अभी हाल प्रकाशित सी राजामोहन के लेख में दो विशेषज्ञों के हवाले से कहा गया है कि भारत में बड़ी ताकत बनने की कई खूबियां हैं पर इतनी नहीं कि वह दुनिया की व्यवस्था को आकार दे सके। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी के इतिहासकार ब्रेंडन सिम्स ने अपनी नई किताब- द रिटर्न ऑफ ग्रेट पावर्स में भारत को फ्रांस, जर्मनी और जापान के साथ महाशक्ति बनने की कगार पर खड़े देशों की सूची में रखा है। वे लिखते हैं यदि अगले दशक में भारत का कुल सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) ब्रिटेन, जापान और जर्मनी से अधिक हो जाता है तब भी वह अमेरिका और चीन से बहुत पीछे तीसरे स्थान पर रहेगा। फॉरेन अफेयर्स पत्रिका में एक लेख में टफ्ट्स यूनिवर्सिटी के माइकेल बेकले की दलील है, विश्व राजनीति में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका तो बनी रहेगी लेकिन अपनी कई घरेलू कमजोरियों के कारण उसके वास्तविक महाशक्ति बनने की संभावना नहीं है। ये घरेलू कमजोरियों कौन सी हैं? 2014 के बाद धार्मिक ध्रुवीकरण बढ़ा है, सरकारी एजेंसियों की कार्रवाई ने राजनीतिक दलों के साथ औद्योगिक, व्यावसायिक हलकों में डर पैदा किया है। उद्योगपति निवेश करने में हिचकिचा रहे हैं। केंद्र सरकार के मंत्री कभी चेतावनी तो कभी सवाल पूछने के अंदाज में कहते हैं, समझ में नहीं आता है उद्योगपति निवेश करने से पीछे क्यों हट रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल में प्राइवेट सेक्टर का निवेश जीडीपी के 11 प्रतिशत पर आ गया है। वहीं मनमोहन सिंह के कार्यकाल में यह 14 प्रतिशत था। यह स्थिति उस वक्त है जब मोदी सरकार ने कॉरपोरेट टैक्स की दर 2019 में 30 प्रतिशत से घटाकर 22 प्रतिशत कर दी। अब उद्योगपति सरकार के फैसलों, उसकी नीतियों पर सवाल उठाने की बजाय उसकी तारीफ करने में लगे रहते हैं। हर बजट का जमकर स्वागत होता है। कुछ साल पहले तक उद्योगपति राहुल बजाज सरकार के खिलाफ खुलकर बोलते थे। फरवरी 2022 में उनके निधन के बाद उद्योग क्षेत्र से ऐसी कोई असरदार आवाज सामने नहीं आई है। कॉरपोरेट सेक्टर जोखिम भी नहीं उठा रहा है।

मानसून के दौरान आर्द्रता और बादलों के बीच से आने वाली यूवी किरणें त्वचा में पिगमेंटेशन की समस्या को बढ़ा देती हैं। अक्सर लोग धूप न होने पर सनस्क्रीन छोड़ देते हैं, जो झाइयों का मुख्य कारण बनता है, इसलिए सही स्किन केयर रूटीन अपनाना अनिवार्य है। मानसून स्किन केयर, झाइयां, पिगमेंटेशन, यूवी किरणें, सनस्क्रीन।

मानसून के समय कई स्किन प्रॉब्लम्स का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान चेहरे की झाइयां यानी पिगमेंटेशन आपकी खूबसूरती को कम कर सकती हैं।

ज्यादातर लोगों को झाइयां केवल तेज धूप और गर्मी के कारण होती है, लेकिन ऐसा बिल्कुल भी नहीं है, क्योंकि मानसून में भी त्वचा पर झाइयां बढ़ सकती है। मानसून के समय झाइयां काफी बढ़ जाती है। आइए आपको इसके पीछे की असली वजह और बचाव के आसान तरीके बताते हैं।

मानसून में क्यों बढ़ती है झाइयों की समस्या?

डर्मेटोलॉजिस्ट एक्सपर्ट के मुताबिक, मानसून के समय अक्सर चेहरे पर झाइयां तेजी से बढ़ने लगती है। इस मौसम में बादलों के बीच से आने वाली हानिकारक यूवी किरणें और उमस त्वचा तक पहुंचती हैं। हवा में नमी और पसीने की वजह से स्किन पर झाइयां ज्यादा उभरकर दिखने लगती हैं, जो चेहरे की खूबसूरती को कम कर सकते हैं।

मानसून में पिगमेंटेशन बढ़ने के मुख्य कारण

– बरसात के मौसम में हवा में नमी बढ़ जाती है, जिससे चेहरा बार-बार चिपचिपा हो जाता है। इस चिपचिपे चेहरे पर धूल-मिट्टी आसानी से जमने लगती है, जो झाइयों का एक बड़ा कारण बन जाती है।

– खासकर कुछ लोग सिर्फतेज धूप में ही सनस्क्रीन का इस्तेमाल करते हैं और बारिश के दिनों में इसे लगाना बंद कर देते हैं। लेकिन आप नहीं जानती है यह आपकी सबसे बड़ी गलती बन जाती है। इस मौसम में चाहे कोई भी हो, सनस्क्रीन लगाने से त्वचा प्रोटेक्ट रहती है और झाइयां, पिंपल्स व रैशेज जैसी परेशानियों कम होती हैं।

– कई बार लोग बरसात के पानी में बार-बार चेहरा को धोते हैं और स्क्रब करते हैं। वे सोचते हैं कि स्क्रब से उनकी स्किन झाइयां कम होंगी और टैनिंग हट जाएगी। हलांकि जरुरत से ज्यादा प्रोडक्ट्स यूज करने से स्किन को रगड़ने से जलन और पिगमेंटेशन बढ़ सकती है।

झाइयों से बचने के लिए अपनाएं ये आसान टिप्स

– ऊपर बताई हुई गलतियों को भूलकर भी न करें। ऐसा करने से झाइयों से बचने में मदद मिलेगी।

– यदि आप घर से बाहर निकले, चाहे धूप हो या बादल, चेहरे पर सनस्क्रीन जरुर लगाएं। आप अपनी स्किन टाइप के हिसाब से सही सनस्क्रीन चयन कर सकती हैं।

– चेहरे की गंदगी साफ करने के लिए हार्श केमिकल वाले प्रोडक्ट्स की जगह माइल्ड फेस वॉश का इस्तेमाल करें। जिससे चेहरा का एक्स्ट्रा ऑयल और पसीना साफहो जाए और पिगमेंटेशन का खतरा भी कम रहेगा।

मैट लिपस्टिक होंठों पर ज्यादा देर तक टिकी रहती है। तो वहीं ग्लॉसी लिपस्टिक होंठों को हाइड्रेटेड और चमकदार लुक देती है। ऐसे मे हम आपको बताने जा रहे हैं कि मानसून में कौन सी लिपस्टिक आपके लिए ज्यादा बेहतर होगी।

मॉनसून गर्मियों से राहत तो देता है, लेकिन इस मौसम में लंबे समय तक मेकअप टिकाए रखने में मुश्किल होती है। हवा में नमी, अचानक होने वाली बारिश और ज्यादा पसीना अक्सर मेकअप को खराब कर देता है। खासकर लिपस्टिक सबसे पहले फैलने या फिर फीकी पड़ने लगती है। ऐसे में कई महिलाएं यह सोचती हैं कि मॉनसून में ग्लॉसी या मैट लिपस्टिक में कौन सी ज्यादा बेहतर होती है। हालांकि दोनों का ही फिनिश और लुक बेहद आकर्षक होता है। लेकिन मॉनसून में इनका रिजल्ट अलग-अलग हो सकता है।

मैट लिपस्टिक होंठों पर ज्यादा देर तक टिकी रहती है। तो वहीं ग्लॉसी लिपस्टिक होंठों को हाइड्रेटेड और चमकदार लुक देती है। ऐसे में आज इस आर्टिकल के जरिए हम आपको बताने जा रहे हैं कि मानसून में कौन सी लिपस्टिक आपके लिए ज्यादा बेहतर होगी। लाइवगेमआयोजन

मैट लिपस्टिक

आजकल कई लोगों की पहली पसंद मैट लिपस्टिक है। क्योंकि यह लंबे समय तक टिकती है। मैट लिपस्टिक में तेल कम और पिगमेंट ज्यादा होता है। इसलिए मैट लिपस्टिक आसानी से फैलती या फिर ट्रांसफर नहीं होती है।

जानें मैट लिपस्टिक के फायदे

मैट लिपस्टिक लॉन्ग लास्टिंग होती है। यह 8 से 12 घंटे या फिर उससे कहीं ज्यादा होंठों पर टिकी रहती है।

नमी और उमस भरे मौसम में भी मैट लिपस्टिक कप या फिर कपड़ों पर नहीं लगती है।

पसीने या बारिश के कारण यह बहती या फैलती नहीं हैं। क्योंकि मैट लिपस्टिक स्मज फ्रूफहोती है। मौसम

मानसून में ग्लॉसी लिपस्टिक लगाना

ग्लॉसी लिपस्टिक लगाने से होंठ मुलायम, चमकदार और भरे हुए दिखते हैं। आजकल ग्लॉसी लिपस्टिक में विटामिन ई, हायल्यूरॉनिक एसिड और पौष्टिक तेल जैसे मॉइस्चराइजिंग तत्व भी शामिल होते हैं।

जानें ग्लॉसी लिपस्टिक के फायदे

ग्लॉसी लिपस्टिक होंठों को हाइड्रेटेड रखती है।

ग्लॉसी लिपस्टिक लगाने से होंठ ज्यादा भरे हुए और आकर्षक लगते हैं।

स्किन की सफाई करने के लिए आप बेसन को एक प्राकृतिक क्लींजर की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले दो चम्मच बेसन लें। अब इसमें थोड़ा दूध या गुलाब जल मिलाकर पेस्ट बनाएं। चेहरे और गर्दन पर हल्के हाथों से मसाज करें। करीबन 2-3 मिनट बाद पानी से धो लें।

बेसन एक ऐसा फूड इंग्रीडिएंट है, जो हर भारतीय किचन में मौजूद होता ही है। अमूमन लोग इसकी मदद से तरह-तरह की डिश बनाते हैं, लेकिन यह स्किन के लिए भी बहुत अधिक फायदेमंद माना गया है। बेसन की मदद से फेस पैक तो हम सभी ने कभी ना कभी जरूर लगाया है। लेकिन यह जरूरी नहीं है कि हर बार बेसन से फेस पैक ही बनाया जाए।

बेसन की खासियत यह है कि यह त्वचा की गंदगी हटाने, अतिरिक्त तेल को नियंत्रित करने और त्वचा को मुलायम बनाने में मदद कर सकता है। इसलिए, आप इसे अपने नियमित स्किनकेयर का एक नेचुरल हिस्सा बना सकते हैं। हालांकि, अगर आपकी स्किन बहुत संवेदनशील है या आपको एलर्जी है, तो पहले पैच टेस्ट जरूर करें। तो चलिए जानते हैं कि बेसन को अपने स्किन केयर रूटीन में किस तरह शामिल करें-

प्राकृतिक क्लींजर की तरह करें इस्तेमाल

स्किन की सफाई करने के लिए आप बेसन को एक प्राकृतिक क्लींजर की तरह इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए सबसे पहले दो चम्मच बेसन लें। अब इसमें थोड़ा दूध या गुलाब जल मिलाकर पेस्ट बनाएं। चेहरे और गर्दन पर हल्के हाथों से मसाज करें। करीबन 2-3 मिनट बाद पानी से धो लें।

डेड स्किन हटाने के लिए करें एक्सफोलिएट

अपनी स्किन की केयर करने के लिए आपको हर बार महंगे स्क्रब का इस्तेमाल करने की रूरत नहीं है। इसे एक हल्के एक्सफोलिएटर के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है। स्किन को एक्सफोलिएट करने के लिए बेसन में थोड़ा सा ओट्स पाउडर और दही मिलाएं। अब चेहरे पर हल्के गोलाकार मूवमेंट में मसाज करें और 1-2 मिनट बाद धो लें। हालांकि, इसे सप्ताह में बस 1 से 2 बार ही इस्तेमाल करें।

टैन हटाने के लिए करें इस्तेमाल

अगर आप धूप में लंबे समय तक रहते हैं तो ऐसे में टैनिंग को कम करने के लिए बेसन का उपयोग किया जा सकता है। टैनिंग कम करने के लिए आप बेसन में दही व एक चुटकी हल्दी डालकर मिक्स करें। इसे सप्ताह में 2 बार लगाएं। हालांकि, याद रखें कि यह सनस्क्रीन का विकल्प नहीं है। टैनिंग से बचने के लिए हमेशा एसपीएफवाला सनस्क्रीन जरूर लगाएं।

वार्म-अप मैच से पहले बड़ा झटका

शुभमन चोटिल, पहले दिन नहीं करेंगे फील्डिंग, राहुल संभाल रहे कप्तानी

कोलंबो। शुभमन गिल अभ्यास सत्र के दौरान दाएं हाथ की रिंग फिंगर में चोटिल हो गए हैं। बीसीसीआई ने एहतियात के तौर पर उन्हें श्रीलंका इलेवन के खिलाफ वार्म-अप मैच के पहले दिन फील्डिंग से बाहर रखा है। उनकी जगह केएल राहुल टीम की कप्तानी कर रहे हैं, जबकि मेडिकल टीम गिल की फिटनेस पर लगातार नजर बनाए हुए है। भारत के टेस्ट कप्तान शुभमन गिल श्रीलंका दौरे पर जाते ही चोटिल हो गए हैं। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (ठब्ब्प्) ने जानकारी दी कि गुरुवार को अभ्यास सत्र के दौरान गिल के दाएं हाथ की रिंग फिंगर में इम्पैक्ट इंजरी हुई है। एहतियात के तौर पर उन्हें श्रीलंका इलेवन (ैस्ब् ग्प्) के खिलाफतीन दिवसीय वार्म-अप मैच के पहले दिन फील्डिंग से बाहर रखा गया है। गिल को चोट लगी, बीसीसीआई का अपडेट बीसीसीआई ने अपने बयान में कहा, श्कप्तान शुभमन गिल को गुरुवार के अभ्यास के दौरान दाएं हाथ की रिंग फिंगर में चोट लगी। सावधानी के तौर पर वह वार्म-अप

मैच के पहले दिन मैदान पर नहीं उतरेंगे। बीसीसीआई की मेडिकल टीम उनकी स्थिति पर लगातार नजर बनाए हुए है।श् बोर्ड ने यह भी बताया कि गिल की गैरमौजूदगी में अनुभवी बल्लेबाज केएल राहुल टीम की कप्तानी करेंगे। कोलंबो में खेला जा रहा अभ्यास मैच कोलंबो के नॉनडिस्क्रिप्ट्स क्रिकेट क्लब ग्राउंड में खेले जा रहे तीन दिवसीय अभ्यास मैच में श्रीलंका इलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का फैसला किया है। हालांकि, अगर आज भारतीय टीम की बल्लेबाजी आती है तो गिल इसके लिए उपलब्ध रहेंगे या नहीं, इस पर फिलहाल कोई आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है। भारत के लिए यह चोट चिंता का विषय हो सकती है, क्योंकि 15 अगस्त से श्रीलंका के खिलाफदो मैचों की टेस्ट सीरीज शुरू होनी है। टीम प्रबंधन उम्मीद करेगा कि कप्तान जल्द पूरी तरह फिट होकर सीरीज के पहले टेस्ट तक उपलब्ध हो जाएं। जसप्रीत बुमराह पहले ही चोटिल होकर सीरीज से बाहर हो चुके हैं, जबकि साई सुदर्शन को अभी तक फिटनेस क्लीयरेंस नहीं मिला है। श्रीलंका टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का स्क्वॉडरू शुभमन गिल (कप्तान), केएल राहुल (उपकप्तान), यशस्वी जायसवाल, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), साई सुदर्शन, ध्रुव जुरेल (विकेटकीपर), रवींद्र जडेजा, कुलदीप यादव, मानव सुथार, मोहम्मद सिराज, प्रसिद्ध कृष्णा, गुरनूर बरार, देवदत्त पडिक्कल, सारांश जैन और आकिब नबी।

कार्लसन से होगी टक्कर

भारतीय ग्रैंडमास्टर निहाल सरीन, अरविंद चिदंबरम, प्रणेश एम और अर्जुन एरिगैसी 11 से 15 अगस्त तक यहां होने वाले ईस्पोर्ट्स विश्व कप की शतरंज प्रतियोगिता में विश्व के नंबर एक खिलाड़ी मैग्नस कार्लसन सहित कई मजबूत प्रतिद्वंद्वियों का सामना करेंगे। निहाल, अरविंद और प्रणेश ईस्पोर्ट्स और गेमिंग कंटेंट की दिग्गज कंपनी एस8यूएल ईस्पोर्ट्स का प्रतिनिधित्व करेंगे जबकि ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी जेन जी ईस्पोर्ट्स की तरफसे अपना भाग्य आजमाएंगे। यह चारों भारतीय खिलाड़ी मौजूदा चौंपियन कार्लसन (टीम लिक्विड) के नेतृत्व वाले एक विशिष्ट समूह के खिलाफ15 लाख अमेरिकी डॉलर (14.2 करोड़ रुपये) के पुरस्कार पूल में हिस्सेदारी हासिल करने की कोशिश करेंगे। इस प्रतियोगिता में हिकारू नाकामुरा और अलीरेजा फिरोजा (टीम फाल्कन्स), नोदिरबेक अब्दुसत्तोरोव (नैटस विंसरे), हैंस मोके नीमन (गॉडलाइक एस्पोर्ट्स), और दुनिया भर के कई अन्य ग्रैंडमास्टर भी हिस्सा लेंगे। निहाल, प्रणेश और अर्जुन ने चौंपियंस शतरंज टूर (सीसीटी) 2025-2026 में अपने अच्छे प्रदर्शन के दम पर ग्रुप चरण के लिए सीधे क्वालीफाई किया है, जबकि अरविंद ने इस साल की शुरुआत में ड्रीमहैक अटलांटा के जरिए इस प्रतियोगिता में जगह बनाई है। वह टूर्नामेंट के पहले चरण यानि प्ले-इन चरण में अपना अभियान शुरू करेंगे। निहाल और अर्जुन ने पिछले साल भी इस प्रतियोगिता में भाग लिया था। तब निहाल क्वार्टर फाइनल तक पहुंचे थे, जबकि अर्जुन चौथे स्थान पर रहे थे।

मंत्री टोनी बर्क ने दिलाई शपथ

ऑस्ट्रेलिया ने इस साल मार्च में शरण मांगने वाली ईरान की दो महिला फुटबॉल खिलाड़ियों को नागरिकता प्रदान कर दी है। फतिमेह पसंदिदेह और अतेफेह रामेजानीसादेह ने गुरुवार को एक बयान में कहा कि आव्रजन मंत्री टोनी बर्क ने उन्हें एक दिन पहले उनके ऑस्ट्रेलियाई गृह नगर ब्रिस्बेन में नागरिकता समारोह में शपथ दिलाई थी। स्थानीय ईरानी समुदाय के लोगों ने इस समारोह में भाग लिया। रामेजानीसादेह ने बयान में कहा, ''कल का दिन मेरे लिए सचमुच बहुत खास और अविस्मरणीय था। ऑस्ट्रेलियाई नागरिक बनकर मुझे गर्व महसूस हो रहा है। ऑस्ट्रेलिया ने मुझे अपना जीवन और भविष्य बनाने का अवसर दिया है।'' पसंदिदेह ने कहा, ''बुधवार का दिन मेरे जीवन के सबसे खुशी भरे दिनों में से एक था। ऑस्ट्रेलियाई नागरिक बनकर मुझे बेहद गर्व और खुशी हो रही है। हमने जो कुछ भी झेला है और जिन चुनौतियों का सामना किया है, उसके बाद यह पल मेरे लिए शब्दों से परे है।

सेमीफाइनल में प्रवेश

मोहम्मद अशफाक ने पुरुषों की 400 मीटर दौड़ में अंडर-20 राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़कर यहां विश्व एथलेटिक्स अंडर-20 चौंपियनशिप के सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई किया, जबकि अमानत कंबोज ने प्रतियोगिता के दूसरे दिन महिलाओं की चक्का फेंक (डिस्कस थ्रो) के फाइनल में अपने व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के साथ छठा स्थान हासिल किया। 19 वर्षीय अशफाक ने पहले दौर की हीट पांच में 45.81 सेकंड का समय लिया। वह अपनी हीट में अमेरिका के जेडन डी लियोन (45.63 सेकंड) के बाद दूसरे स्थान पर रहे। इतिहास उन्होंने कुल मिलाकर चौथे स्थान पर रहकर सेमीफाइनल में जगह बनाई। अशफाक ने इसी वर्ष अप्रैल में बनाए गए अपने ही पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड 46.05 सेकंड को बेहतर किया। भारत के एक अन्य खिलाड़ी पीयूष राज हीट छह में 47.78 सेकंड के समय के साथ पांचवें और कुल मिलाकर 35वें स्थान पर रहने के बाद आगे नहीं बढ़ पाए। महिलाओं के चक्का फेंक के फाइनल में 18 वर्षीय कंबोज ने अपने पहले प्रयास में 53.24 मीटर का थ्रो किया जिससे वह छठे स्थान पर रहीं। यह उनका अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। चीन की सु यिक्सिन ने 61.06 मीटर के साथ स्वर्ण पदक जीता, जबकि अमेरिका की जैसलीन मैसी (58.41 मीटर) और साइप्रस की मरीना हाजिकोस्टा (54.88 मीटर) ने क्रमशः रजत और कांस्य पदक हासिल किए। पुरुषों की ऊंची कूद में बसंत ने क्वालीफाइंग राउंड ग्रुप ए में2.14 मीटर की सर्वश्रेष्ठ कूद के साथ पांचवां और कुल मिलाकर 11वां स्थान हासिल करने के बाद फाइनल के लिए क्वालीफाई किया। भारत के एक अन्य खिलाड़ी के अंबरीश प्रतियोगिता से बाहर हो गए। वह क्वालीफाइंग राउंड ग्रुप बी में केवल 2.05 मीटर की ऊंचाई पार करके 12वें और कुल मिलाकर 24वें स्थान पर रहे।

विश्वकप में किन 3 खिलाड़ियों पर रहेंगी हाशिम अमला की नजरें? जताई अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद

नई दिल्ली। दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज हाशिम अमला ने वनडे विश्वकप 2027 के लिए तीन खिलाड़ियों को चुना है, जिन पर उनकी खास नजर रहेगी। अमला ने भारत के रोहित शर्मा, दक्षिण अफ्रीका के डेवाल्ड ब्रेविस और ऑस्ट्रेलिया के ट्रेविस हेड को संभावित स्टार बताया है। रोहित का विश्वकप खेलना अभी तय नहीं है, जबकि ब्रेविस दक्षिण अफ्रीका के उभरते सितारे हैं। वहीं, 2023 विश्वकप फाइनल के हीरो ट्रेविस हेड से अमला को 2027 में भी बड़े प्रदर्शन की उम्मीद है। वनडे विश्वकप 2027 को लेकर सभी टीमों ने तैयारियां शुरू कर दी हैं। सभी टीमों में प्रयोगों का दौर जारी है। विश्वकप अगले साल

अक्तूबर-नवंबर में दक्षिण अफ्रीका, नामीबिया और जिम्बाब्वे की मेजबानी में खेला जाना है। इस टूर्नामेंट को लेकर दक्षिण अफ्रीका के पूर्व बल्लेबाज हाशिम अमला ने एक बड़ी भविष्यवाणी की है। उन्होंने आईसीसी से बातचीत में तीन खिलाड़ियों के नाम बताए, जो उन्हें लगता है कि विश्वकप में कमाल कर सकते हैं। इन तीनों पर अमला की नजरें होंगी। अमला ने रोहित का नाम लिया अमला ने जिन तीन खिलाड़ियों के नाम लिए हैं, उनमें भारत, दक्षिण अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया से एक-एक खिलाड़ी है। अमला ने भारत से रोहित शर्मा को चुना है। हालांकि, रोहित का अभी वनडे विश्वकप में खेलना तय नहीं है। हाल फिलहाल में कई रिपोर्ट्स आईं कि चयनकर्ता उनके विश्वकप में खेलने को लेकर निश्चित नहीं हैं। हाल ही में इंग्लैंड दौरे पर यहां तक अफवाहें फैली थीं कि लॉर्ड्स में वनडे उनका आखिरी वनडे होगा। हालांकि, बाद में बीसीसीआई सचिव देवजीत सैकिया ने इन रिपोर्ट्स का खंडन किया था। रोहित वनडे विश्वकप में भारत के तीसरे सबसे सफल बल्लेबाज हैं। उनके नाम 28 मैचों में 60.57 की औसत से 1575 रन हैं।

आठ महीने में 10 भारतीय खिलाड़ियों को लगी चोट, नाराज बीसीसीआई ने शुरू की फिटनेस मानकों की समीक्षा

मुंबई। श्रीलंका में अभ्यास के दौरान भारतीय कप्तान शुभमन गिल के दाहिने हाथ के अंगूठे में चोट लग गई। बल्लेबाजी के बाद फील्डिंग प्रैक्टिस में दोबारा चोट लगने के कारण उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। पिछले आठ महीनों में करीब 10 भारतीय खिलाड़ियों के चोटिल होने के बीच बीसीसीआई फिटनेस व्यवस्था की आंतरिक समीक्षा कर रहा है। बोर्ड फिटनेस मानकों में बदलाव और ब्रोंको टेस्ट को ज्यादा प्रभावी तरीके से लागू करने पर भी विचार कर सकता है। भारतीय क्रिकेट टीम के श्रीलंका दौरे से पहले कप्तान शुभमन गिल के चोटिल होने से टीम प्रबंधन की चिंता बढ़ गई है। कोलंबो में अभ्यास के दौरान गिल के दाहिने हाथ की अंगुली पर चोट लगी। इसके बाद उन्हें मेडिकल टीम ने तत्काल जरूरी उपचार दिया। कुछ देर बाद वह नेट्स पर लौटे, लेकिन फील्डिंग प्रैक्टिस के दौरान उनके हाथ में दोबारा चोट लग गई और उन्हें मैदान से बाहर जाना पड़ा। इसके बाद मेडिकल टीम ने उन्हें दोबारा मैदान पर नहीं लौटने दिया। वह श्रीलंका के खिलाफवार्म अप मैच के पहले दिन फील्डिंग के लिए भी नहीं उतरे। गिल की चोट ऐसे समय में सामने आई है, जब भारतीय क्रिकेट में खिलाड़ियों की फिटनेस और फिजियो से जुड़े मुद्दों को लेकर बहस तेज है। पिछले आठ महीनों में करीब 10 भारतीय खिलाड़ियों के चोटिल होने के बाद भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (ठब्ब्प्) भी फिटनेस व्यवस्था की समीक्षा करने की तैयारी में है। 10 खिलाड़ी चोटिल, बढ़ते मामलों से ठब्ब्प् भी चिंतित भारतीय टीम में पिछले आठ महीनों के दौरान करीब 10 खिलाड़ियों के चोटिल होने की बात सामने आई है। इनमें जसप्रीत बुमराह, कप्तान शुभमन गिल, हार्दिक पांड्या और हर्षित राणा जैसे नाम शामिल हैं। खिलाड़ियों के बार-बार चोटिल होने को लेकर फिटनेस व्यवस्था पर भी सवाल उठ रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, भारतीय टीम के हेड कोच गौतम गंभीर और फिटनेस से जुड़े सपोर्ट स्टाफके बीच भी इस मुद्दे पर चर्चा हुई है। बीसीसीआई की ओर से खिलाड़ियों की फिटनेस और चोट प्रबंधन व्यवस्था की आंतरिक समीक्षा कराए जाने की बात भी सामने आई है।

खुद पर फायरिंग की झूठी सूचना देने वाला गिरफ्तार

बस्ती। बस्ती पुलिस ने एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया है जिसने अपने पड़ोसियों को फंसाने के लिए खुद पर फायरिंग की झूठी सूचना दी थी। आरोपी रामजन्म वर्मा ने डायल–112 पर यह फर्जी जानकारी दी थी। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त अवैध देसी पिस्टल भी बरामद की है। यह मामला 5 अगस्त 2026 की रात करीब 11 बजे का है, जब रामजन्म वर्मा ने डायल–112 पर सूचना दी कि उसके पड़ोसी उमेश और कृष्ण कुमार ने उसके दरवाजे पर जान से मारने की नीयत से पिस्टल से फायरिंग की है। सूचना मिलते ही परसरामपुर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और घटना की जांच शुरू की। पुलिस ने घटनास्थल से संबंधित साक्ष्य जुटाए और परिवारजनों व अन्य संबंधित व्यक्तियों के बयान दर्ज किए। जांच और पूछताछ के दौरान पुलिस को प्राप्त तथ्यों और साक्ष्यों में विरोधाभास मिला। गहन पूछताछ करने पर रामजन्म वर्मा ने स्वीकार किया कि उसने अपने पड़ोसियों उमेश और कृष्ण कुमार को एक गंभीर मुकदमे में फंसाने के इरादे से अपने दरवाजे पर खुद फायरिंग की थी और विपक्षियों के खिलाफ झूठी सूचना दी थी। आरोपी रामजन्म वर्मा (उम्र करीब 29 वर्ष, निवासी ग्राम करमिया, थाना परसरामपुर) की निशानदेही पर पुलिस ने एक .32 बोर की देसी पिस्टल बरामद की। उसे 8 अगस्त 2026 को सुबह करीब 08.45 बजे कोहरायें तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने अभियुक्त के खिलाफ मु0अ0सं0 259/2026 धारा 308(7) बीएनएस एवं 3/25 आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए उसे न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

बृजेश पाठक ने जिला अस्पताल की इमरजेंसी वार्ड में व्यवस्थाओं का जायजा लिया

बस्ती। सूबे के डिप्टी सीएम एवं स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक शनिवार को बस्ती पहुंचे। दोपहर करीब 12.40 बजे उन्होंने जिला अस्पताल का औचक निरीक्षण किया। इमरजेंसी वार्ड में व्यवस्थाओं का जायजा लेते समय चादरों और एसी की स्थिति को लेकर उन्होंने नाराजगी जताई और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को व्यवस्थाएं तत्काल दुरुस्त करने के निर्देश दिए। डिप्टी सीएम ने इमरजेंसी वार्ड में भर्ती मरीजों से उनके इलाज और अस्पताल में मिल रही सुविधाओं के बारे में जानकारी ली। निरीक्षण के दौरान उन्होंने साफ–सफाई, मरीजों की सुविधा और वार्ड की अन्य व्यवस्थाओं का भी अवलोकन किया। रीक्षण के बाद डिप्टी सीएम ने भाजपा जिलाध्यक्ष विवेकानंद मिश्रा, विधान परिषद सदस्य सुभाष यदुवंशी, जिलाधिकारी कृत्तिका ज्योत्सना, सीएमओ डॉ. राजीव निगम, प्रमुख अधीक्षक अनिल कुमार, पुलिस अधीक्षक डॉ. यशवीर सिंह और सीडीओ सार्थक अग्रवाल सहित स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के साथ बैठक की। बैठक में स्वास्थ्य सेवाओं की समीक्षा की गई। इस दौरान उन्होंने आशा कार्यकर्ताओं के लंबित भुगतान को लेकर आवश्यक कार्रवाई करने और भुगतान की प्रक्रिया में तेजी लाने के निर्देश दिए।

कमरे में पंखे से फंदे के सहारे लटका मिला युवक का शव

बस्ती। शनिवार सुबह करीब सात बजे एक युवक का शव उसके कमरे में पंखे से फंदे के सहारे लटका मिला। युवक की पहचान हिमांशु के रूप में हुई है। घटना की सूचना मिलते ही परिवार में हड़कंप मच गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को कब्जे में ले लिया और आगे की कार्रवाई शुरू कर दी है। मामला दुबौलिया थाना क्षेत्र के भिउरा गांव का है। शुक्रवार रात हिमांशु का अपनी पत्नी से किसी बात को लेकर झगड़ा हुआ था। झगड़े के बाद वह पत्नी से अलग होकर दूसरे कमरे में सोने चला गया था। शनिवार सुबह जब वह काफी देर तक कमरे से बाहर नहीं आया, तो परिजनों ने अंदर जाकर देखा। वहां हिमांशु पंखे से लटका हुआ मिला, जिसके बाद उन्होंने तत्काल पुलिस को सूचना दी। बताया गया है कि हिमांशु खेती–किसानी का काम करता था और अपने परिवार के साथ गांव में ही रहता था। इस घटना के बाद पूरे गांव में शोक का माहौल है। दुबौलिया थाना पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण किया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

तीन बच्चों की मां प्रेमी संग रहने पर अड़ी, थाने में घंटों चली पंचायत- पति बच्चों की दुहाई देता रहा

गोरखपुर। शनिवार को महिला को चौक थाने लाकर उसके पति और परिजनों के सामने समझाने का प्रयास किया गया। इस दौरान घंटों पंचायत चली। पति बार–बार अपने तीनों मासूम बच्चों की ओर देखते हुए पत्नी से घर लौटने की गुहार लगाता रहा लेकिन महिला प्रेमी के साथ रहने के अपने फैसले पर अड़ी रही। नगर पंचायत चौक के एक वार्ड में शनिवार को उस समय अजीबोगरीब स्थिति बन गई, जब तीन बच्चों की मां प्रेमी के साथ रहने की जिद पर अड़ गई। चौक थाने में घंटों चली पंचायत के दौरान पति बच्चों की दुहाई देकर पत्नी को समझाता रहा लेकिन महिला पीछे हटने को तैयार नहीं हुई। जानकारी के अनुसार, महिला कुछ दिन पहले अपने तीन बच्चों को छोड़कर घर से रहस्यमय ढंग से लापता हो गई थी। पत्नी के अचानक लापता होने से परेशान पति सुधीर चौधरी ने दो अगस्त को चौक थाने में गुमशुदगी की सूचना दी। पुलिस ने जांच शुरू की तो महिला के प्रेमी के साथ रहने की जानकारी सामने आई। इसके बाद पुलिस ने महिला को ढूंढ निकाला लिया। शनिवार को महिला को चौक थाने लाकर उसके पति और परिजनों के सामने समझाने का प्रयास किया गया। इस दौरान घंटों पंचायत चली। पति बार–बार अपने तीनों मासूम बच्चों की ओर देखते हुए पत्नी से घर लौटने की गुहार लगाता रहा लेकिन महिला प्रेमी के साथ रहने के अपने फैसले पर अड़ी रही। थाने में मौजूद लोगों के मुताबिक महिला ने साफ तौर पर पति के साथ रहने से इनकार कर दिया और अपने प्रेमी के साथ रहने की इच्छा जताई। पत्नी के इस फैसले से पति के सामने एक ओर परिवार टूटने का संकट खड़ा हो गया, तो दूसरी ओर तीन मासूम बच्चों के भविष्य को लेकर भी सवाल खड़े हो गए।

भाजपा पार्षद ज्ञानती देवी को हाईकोर्ट से बड़ी राहत, निर्वाचन रद्द करने के आदेश पर रोक– बनीं रहेंगी पार्षद

गोरखपुर। यह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली और न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र की खंडपीठ ने ज्ञानती देवी की ओर से दाखिल प्रथम अपील पर सुनवाई करते हुए दिया। याची के निर्वाचन को गोरखपुर के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीशध्फास्ट ट्रैक कोर्ट ने 23 जुलाई के फैसले से शून्य घोषित कर दिया था। इलाहाबाद हाईकोर्ट ने गोरखपुर नगर निगम के शाहपुर वार्ड की भाजपा पार्षद ज्ञानती देवी का निर्वाचन रद्द करने वाले चुनाव न्यायाधिकरण के फैसले पर अंतरिम रोक लगा दी है। साथ ही विपक्षी पक्षों को नोटिस जारी करते हुए अगली सुनवाई के लिए 15 सितंबर की तारीख तय की है। इस राहत पर ज्ञानती देवी ने हाईकोर्ट का ाााार जमाया है। यह आदेश मुख्य न्यायमूर्ति अरुण भंसाली और न्यायमूर्ति क्षितिज शैलेंद्र की खंडपीठ ने ज्ञानती देवी की ओर से दाखिल प्रथम अपील पर सुनवाई करते हुए दिया। याची के निर्वाचन को गोरखपुर के अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीशध्फास्ट ट्रैक कोर्ट ने 23 जुलाई के फैसले से शून्य घोषित कर दिया था। इसके खिलाफ हाईकोर्ट में अपील दाखिल कर इस फैसले को चुनौती दी गई थी।अपीलार्थी की ओर से दलील दी गई कि निर्वाचन न्यायाधिकरण ने महत्वपूर्ण तथ्यों की अनदेखी की। फॉर्म–7ए में राजनीतिक दल की ओर से घोषित उम्मीदवार के विवरण में पति का नाम गलती से श्याम लाल दर्ज हो गया था, जबकि याची के पति का नाम परशुराम है। फॉर्म तैयार करने वाले गवाह राजेश कुमार गुप्ता ने भी अपनी गवाही में स्पष्ट किया था कि याची ही भाजपा की अधिकृत उम्मीदवार थीं। अपील में यह भी कहा गया कि संपत्ति का विवरण छिपाने के आरोप पर निर्वाचन न्यायाधिकरण ने यह विचार नहीं किया कि कथित चूक का चुनाव परिणाम पर वास्तव में कोई प्रभाव पड़ा था या नहीं। पार्षद ज्ञानती देवी को राहत, कोर्ट का जताया आभार गोरखपुर। हाईकोर्ट से राहत मिलने के बाद शाहपुर की पार्षद ज्ञानती देवी और उनके परिवार में खुशी है। उच्च न्यायालय ने ज्ञानती देवी की पार्षद पद निरस्त करने वाले आदेश पर रोक लगा दी है। न्यायालय के इस निर्णय को परिवार ने सत्य और न्याय की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया है और कोर्ट का आभार जताया है। ज्ञानती देवी के पुत्र व पार्षद प्रतिनिधि चंद्रशेखर सिंह ने कहा कि पिछले कुछ दिनों से वह और उनका परिवार लगातार सुर्खियों में रहा है। विरोधियों की ओर से उनकी और परिवार की छवि धूमिल करने के उद्देश्य से आरोप लगाए गए। ऐसे समय में हाईकोर्ट का आदेश परिवार के लिए बड़ी राहत है। मेयर डॉ. मंगलेश श्रीवास्तव ने बताया कि आदेश की कॉपी अभी हमें प्राप्त नहीं हुई है। आदेश की कॉपी मिलते ही कोर्ट के आदेश का पालन होगा।

विकास परियोजनाओं का निरीक्षण, कमिश्नर बोले–जिन्हें दे चुके हैं मुआवजा, उन मकानों को ध्वस्त कराएं

गोरखपुर। कमिश्नर ने हड़हवा फाटक रेल ओवरब्रिज के कार्य की धीमी प्रगति पर कड़ी नाराजगी जताई और उप जिलाधिकारी, सदर को निर्देशित किया कि ब्रिज निर्माण में एक–दो मकान, जिन्होंने मुआवजा ले लिया है, उसे हटाने की कार्यवाही त्वरित गति से कराएं। इस दौरान एसडीएम सदर ज्ञान प्रताप सिंह, पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड–3 के एक्सईएन यूपी सिंह, सेतु निगम के पीडी अरुण सिंह आदि मौजूद रहे। कमिश्नर इंद्र विक्रम सिंह ने शनिवार को जिले की महत्वपूर्ण परियोजनाओं का औचक निरीक्षण किया। चार फाटक से असुरन तक फोरलेन सड़क और स्पोर्ट्स कॉलेज चौराहा से फर्टिलाइजर मार्ग के चौड़ीकरण में धीमी प्रगति पर नाराजगी जताई। कार्यदायी फर्म को नोटिस जारी करने और मैन पावर बढ़ाकर 30 अक्तूबर तक कार्य पूरा के निर्देश दिए। चारफाटक से असुरन तक फोरलेन सड़क निर्माण की धीमी प्रगति पर नाराज कमिश्नर ने कार्यदायी संस्था और अधिकारियों को जमकर फटकार लगाई। उन्होंने कार्यदायी संस्था को श्रमिकों की संख्या बढ़ाने और नालों पर स्लैब डालने का निर्देश दिया। असुरन से पिपराइच फोरलेन सड़क के निरीक्षण में कमिश्नर ने पाया कि कुछ स्थानों पर काम शुरू नहीं हुआ है। इस पर उन्होंने नाराजगी जताई। कहा कि तेजी से कार्य शुरू कराएं। आयुष विश्वविद्यालय में निमार्णाधीन प्रेक्षागृह का निरीक्षण करने के बाद कहा कि 31 अक्तूबर तक काम पूरा करा लें। मानीराम–बालापार टिकरिया–गांगी बाजार सड़क का कार्य तेजी से कराने के निर्देश दिए। इसी मार्ग पर बालापार में निर्माणाधीन सिक्टौर थाने का निरीक्षण करते हुए कार्यदायी संस्था को निर्देशित किया गया कि श्रमिकों की संख्या बढ़ाकर कार्य को सितंबर तक पूरा कराएं। इसके साथ ही एचएन सिंह चौराहा–गोरखनाथ मंदिर तक सड़क चौड़ीकरण कार्य के दौरान सड़क के बीच में लगे बिजली ट्रांसफार्मर को शिफ्ट करने को कहा। पादरी बाजार फ्लाईओवर के नीचे सर्विस रोड को भी शीघ्र पूरा कराने के निर्देश परियोजना प्रबंधक को दिए।जिन्हें दे चुके हैं मुआवजा, उन मकानों को ध्वस्त कराएं गोरखपुर। कमिश्नर ने हड़हवा फाटक रेल ओवरब्रिज के कार्य की धीमी प्रगति पर कड़ी नाराजगी जताई और उप जिलाधिकारी, सदर को निर्देशित किया कि ब्रिज निर्माण में एक–दो मकान, जिन्होंने मुआवजा ले लिया है, उसे हटाने की कार्यवाही त्वरित गति से कराएं। इस दौरान एसडीएम सदर ज्ञान प्रताप सिंह, पीडब्ल्यूडी निर्माण खंड–3 के एक्सईएन यूपी सिंह, सेतु निगम के पीडी अरुण सिंह आदि मौजूद रहे।

स्कूल न जाकर युवकों से मिलने निकली थीं दो सगी बहनें समेत 3 छात्राएं, मां–पिता की डांट से नाराज थीं

गोरखपुर। पुलिस के मुताबिक, शुक्रवार सुबह दोनों सगी बहनें स्कूल पहुंची थीं, जबकि तीसरी छात्रा घर से निकलने के बाद विद्यालय नहीं गई। दोपहर में वह दोनों बहनों को बुलाने स्कूल के गेट पर पहुंची लेकिन छुट्टी से पहले गेटमैन ने उसे बाहर जाने नहीं दिया। छुट्टी के बाद तीनों की नामजद युवकों से फोन पर बातचीत हुई। इसके बाद शहर में मिलने के लिए तीनों एक साथ निकल गईं। मां–बाप की डांट से नाराज होकर घर से निकलीं दो सगी बहनों समेत तीन छात्राओं को गुलरिहा पुलिस ने शनिवार सुबह झुंगिया बाजार के पास से खोज लिया। तीनों के लापता होने पर परिजन की तहरीर के आधार पर बहला–फुसलाकर भगाने की प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पुलिस अब नामजद युवकों के संपर्क में आने और पूरे घटनाक्रम की जांच कर रही है। पुलिस के मुताबिक, शुक्रवार सुबह दोनों सगी बहनें स्कूल पहुंची थीं, जबकि तीसरी छात्रा घर से निकलने के बाद विद्यालय नहीं गई। दोपहर में वह दोनों बहनों को बुलाने स्कूल के गेट पर पहुंची लेकिन छुट्टी से पहले गेटमैन ने उसे बाहर जाने नहीं दिया। छुट्टी के बाद तीनों की नामजद युवकों से फोन पर बातचीत हुई। इसके बाद शहर में मिलने के लिए तीनों एक साथ निकल गईं। छात्राओं के लापता होने पर दोनों सगी बहनों के पिता की तहरीर पर जंगल माघी निवासी अभिषेक निषाद और तीसरी छात्रा की मां की तहरीर पर सूरज निषाद, रामअवध, राहुल व देवनाथ निषाद के खिलाफ बहला–फुसलाकर भगाने की प्राथमिकी दर्ज की गई थी। पुलिस नामजद युवकों की तलाश में उनके घर पहुंची तो वे अपने–अपने घर में सोते मिले। इसी दौरान पुलिस को उस छात्रा का मोबाइल नंबर मिला, जिसके पास फोन था। मोबाइल नंबर के आधार पर पुलिस ने लोकेशन ट्रेस की तो गोरखनाथ क्षेत्र के सूरजकुंड की लोकेशन मिली। हालांकि कुछ देर बाद मोबाइल बंद हो गया। जांच में सामने आया कि तीनों छात्राएं नामजद युवकों के इंतजार में गुलरिहा क्षेत्र के झुंगिया के पास रुकी थीं। शनिवार सुबह मोबाइल दोबारा चालू हुआ तो पुलिस को उनकी लोकेशन मिल गई। इसके आधार पर पुलिस टीम ने झुंगिया बाजार के पास से तीनों को खोज लिया। पुलिस अब नामजद युवकों की भूमिका के साथ छात्राओं के उनके संपर्क में आने और उनके साथ निकलने की परिस्थितियों की जांच कर रही है। सीओ गोरखनाथ रवि सिंह ने बताया कि छात्राओं के बयान के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

कांवड़ियों का विशाल जनसैलाब उमड़ा

बस्ती। सावन के पवित्र महीने में राम जानकी मार्ग पर कांवड़ियों का विशाल जनसैलाब उमड़ पड़ा है। भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए बड़ी संख्या में शिवभक्त कंधे पर कांवड़ लेकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे हैं।

कानपुर–लखनऊ एक्सप्रेसवे की गुणवत्ता पर सवाल, हाईटेक तकनीक के बावजूद खामियां, मानवीय निगरानी की जरूरत

लखनऊ। कानपुर–लखनऊ एक्सप्रेसवे धंसने के बाद इसकी गुणवत्ता पर सवाल खड़े हो रहे हैं। 3डी एएमजी सहित कई आधुनिक तकनीकों के इस्तेमाल के बाद भी खामियां सामने आई हैं। सवाल है कि क्या तकनीक पर बढ़ती निर्भरता के बीच मानवीय इंजीनियरिंग निगरानी कमजोर पड़ी है? यूपी में कानपुर–लखनऊ एक्सप्रेसवे को देश के हाईटेक एक्सप्रेसवे के तौर पर तैयार किया गया है। यह 63 किलोमीटर लंबा एक्सप्रेसवे है। इसके निर्माण में पहली बार बड़े स्तर पर 3डी ऑटोमेटेड मशीन गाइडेंस (एएमजी) तकनीक का उपयोग किया गया। एक्सप्रेसवे के संचालन में एआई आधारित निगरानी कैमरे, एडवांस ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम और बैरियरलेस टोलिंग जैसी तकनीकें भी शामिल हैं। लेकिन उद्घाटन के कुछ ही समय बाद बारिश में सड़क क्षतिग्रस्त हो गई। सड़क की परत उखड़ने और एक हिस्से के धंसने से हाईटेक निर्माण मॉडल पर सवाल उठे हैं। विशेषज्ञ पूछ रहे हैं कि जब मशीनें सड़क की ऊंचाई, ढलान और डिजाइन को सटीकता से नियंत्रित कर सकती हैं, तो गुणवत्ता में चूक क्यों हुई। यह भी

सवाल है कि क्या तकनीक के साथ मानवीय इंजीनियरिंग हस्तक्षेप और मौके पर गुणवत्ता की निगरानी उतनी मजबूत थी। 3डी एएमजी तकनीक का उपयोग एक्सप्रेसवे निर्माण में 3डी एएमजी तकनीक को एक पायलट के तौर पर इस्तेमाल किया गया। इसमें 3डी इंजीनियरिंग मॉडल को निर्माण मशीनों के कंप्यूटर सिस्टम से जोड़ा जाता है। मशीन पर लगे रिसीवर वास्तविक स्थिति की जानकारी देते हैं और ऑनबोर्ड कंप्यूटर डिजिटल मॉडल से तुलना करता है। इससे मशीन के संचालन को नियंत्रित किया जाता है, जैसे मिट्टी की सतह को निर्धारित ऊंचाई के अनुसार काटना या भरना। पारंपरिक व्यवस्था में बार–बार सर्वे और मैनुअल मार्किंग की जरूरत पड़ती थी, जो इस तकनीक से खत्म हो गई। तकनीक और गुणवत्ता का संबंध एनएचएआई से जुड़े एक विशेषज्ञ के मुताबिक, 3डी एएमजी मशीन सड़क की सतह की ऊंचाई, चौड़ाई और ढलान बता सकती है। लेकिन यह मिट्टी या अन्य निर्माण सामग्री की गुणवत्ता निर्धारित नहीं करती। केवल तकनीक सड़क की गुणवत्ता तय नहीं कर सकती। मिट्टी की प्रकृति, नमी, परतों की मोटाई, कम्पैक्शन और सामग्री की गुणवत्ता जैसे कई कारक मजबूती तय करते हैं। जल निकासी और मौसम का असर भी महत्वपूर्ण है। विशेषज्ञ ने कहा कि आधुनिक तकनीक के बावजूद साइट पर इंजीनियरों की निगरानी, सामग्री की जांच और फील्ड टेस्ट की भूमिका खत्म नहीं हो सकती। मानवीय निगरानी की जरूरत एक विशेषज्ञ के अनुसार, 3डी एएमजी सेंसर सतह की डिजाइन के अनुसार स्थिति बता सकता है। लेकिन नीचे की मिट्टी की वास्तविक मजबूती का आकलन इंजीनियरिंग जांच से ही होगा। उन्होंने आशंका जताई कि इंजीनियर डिजिटल सिस्टम के आउटपुट को अंतिम सत्य मानकर गुणवत्ता जांच कम कर सकते हैं। हालांकि, मौजूदा खराबियों को देखते हुए तकनीक पर निर्भरता को गुणवत्ता खराब होने का कारण मानना जल्दबाजी होगी। यह जांच का विषय है कि क्या डिजिटल मॉडल के अनुसार बनी सड़क में गुणवत्तापूर्ण सामग्री, पर्याप्त कम्पैक्शन और उचित जल निकासी थी। इंजीनियरों ने मौके पर क्या जांच की और बारिश से पहले कमजोर परतों की पहचान क्यों नहीं हो सकी, यह भी देखना होगा।

30 हजार करोड़ से उत्तर प्रदेश में बनेंगी सड़कें

लखनऊ,संवाददाता। असेम्बली इलेक्शन से पहले ग्रामीण व शहरी क्षेत्रों में सड़कों व पुल–पुलियों का जाल नजर आएगा।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विधायकों द्वारा प्रस्तावित सड़कें व पुल पुलियों के प्रस्तावों की फाइल को मंजूरी दे दी है। विधायकों के प्रस्ताव पर 30 हजार करोड़ रुपये की लागत से नए निर्माण कार्य होंगे। मुख्यमंत्री की मंजूरी के साथ लोक निर्माण विभाग काम शुरू कराने के लिए कार्ययोजना तैयार कराने में जुट गया है। मुख्यमंत्री के निर्देश पर प्रदेश के विधायकों ने सड़कें व पुल पुलियों के निर्माण का प्रस्ताव जिलों में जिलाधिकारियों को दिए थे। डीएम के माध्यम से जिले का कार्ययोजना तैयार करते हुए फाइल शासन को भेजी गई थी।जिलों से आए प्रस्तावों का परीक्षण कर शासन ने कार्ययोजना को स्वीकृति के लिए मुख्यमंत्री के समक्ष प्रस्तुत किया था, जिसे मंजूरी मिल गई है।पीडब्ल्यूडी के विभागाध्यक्ष एके द्विवेदी के मुताबिक जिलों की कार्ययोजना में शामिल कार्यों की आगणन रिपोर्ट तैयार कराते हुए अब वित्त व्यय समिति के पास परीक्षण के लिए भेजी जा रही हैं। कार्ययोजनाओं के लिए बजट स्वीकृतियां 14 अगस्त से जारी की जाएंगी।इसके बाद एक महीने के अंदर टेंडर प्रक्रिया शुरू कर कार्य का अनुबंध किया जाएगा। अक्टूबर से काम शुरू कराए जाने की तैयारी है। मुख्यमंत्री द्वारा मंडलीय दौरे के दौरान विधायकों से सड़कें व पुल पुलियों के निर्माण का प्रस्ताव जिलाधिकारियों के माध्यम से शासन को भेजने के लिए कहा गया था,जिसके बाद विधायकों द्वारा प्रस्तावित 2.25 लाख करोड़ रुपये की लागत से होने वाले निर्माण कार्यों की योजनाएं शासन को भेजी गई थीं। सबसे ज्यादा 40 हजार करोड़ के प्रस्ताव लखनऊ मंडल के विधायकों के थे। विधायकों की प्राथमिकता के आधार पर उपलब्ध बजट के आधार पर प्रस्तावों को मूल कार्ययोजना का हिस्सा बनाया गया है।

नृत्य और खेलों के साथ महिलाओं ने मनाया हरियाली तीज का उत्सव

लखनऊ,संवाददाता। हरियाली तीज के उल्लास और भारतीय संस्कृति की खूबसूरत परंपराओं को समर्पित सोशल इवेंट ग्रुप द्वारा तीज सेलिब्रेशन सीजन–1 का आयोजन होटल द गोल्डन एप्पल, सेक्टर–सी, महानगर, लखनऊ में उत्साह और उमंग के साथ किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बिंदु बोरा उपस्थित रहीं। इसके अलावा विशिष्ट अतिथियों में एनजीओ पार्टनर्स एलायंस क्लब्स इंटरनेशनल से प्रियंका दीक्षित, प्रेरणा मित्रा, डॉक्टर ममता भटनागर और डॉक्टर मीना खरे सहित कई गणमान्य लोग शामिल हुए। कार्यक्रम में महिलाओं ने हरे रंग की पारंपरिक वेशभूषा में सज–धजकर हिस्सा लिया और तीज के पर्व को खास अंदाज में मनाया।कार्यक्रम की शुरुआत पंक्चुअलिटी राउंड से हुई, जिसके बाद हाउजी, रैपिड फायर राउंड्स, मनोरंजक खेलों और विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने ग्रुप डांस, सास–बहू डांस तथा मां–बेटी डांस प्रतियोगिता में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इस दौरान प्रतिभागियों के बीच गजब का उत्साह और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा देखने को मिली।समारोह में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली महिलाओं को बेस्ट मेहंदी, बेस्ट हेयर स्टाइल, बेस्ट रील मेकर सहित कई पुरस्कार प्रदान किए गए। इसके अलावा बेस्ट स्माइल, बेस्ट पोज, बेस्ट फ्लावर ज्वेलरी, बेस्ट एनर्जी, बेस्ट डांस, बेस्ट आइज, बेस्ट सिंगर और ओरिजिनल लॉन्ग हेयर जैसी विशेष श्रेणियों में भी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया। लकी ड्रॉ ने कार्यक्रम का रोमांच और बढ़ा दिया।आयोजकों ने बताया कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य तीज की पारंपरिक संस्कृति और भारतीय पारिवारिक मूल्यों को आधुनिक एवं मनोरंजक स्वरूप के साथ जोड़ना है। कार्यक्रम में महिलाओं के साथ–साथ बच्चों के लिए भी विशेष प्रवेश और मनोरंजन की व्यवस्था की गई थी।सोशल इवेंट ग्रुप की ओर से इस सफल आयोजन में दीपा, ज्योति, मोना, रितु, गीता और मीनाक्षी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रतिभागियों ने तीज के पारंपरिक गीतों और नृत्य का भरपूर आनंद लिया। आयोजकों ने कहा कि सीजन–1 की शानदार सफलता के बाद भविष्य में भी ऐसे सांस्कृतिक एवं सामाजिक आयोजनों को और भव्य रूप में आयोजित किया जाएगा।

सूचना आयोग चालक संघ के जुबेर अध्यक्ष और शिवकुमार मंत्री निर्वाचित

लखनऊ,संवाददाता। अगस्त। राजकीय वाहन चालक महासंघ के अध्यक्ष रिजवान अहमद सिद्दीकी की अध्यक्षता में राजकीय वाहन चालक संघ उत्तर प्रदेश राज्य सूचना आयोग का प्रथम अधिवेशन राजकीय वाहन चालक महासंघ उत्तर प्रदेश की देखरेख में प्रधान कार्यालय 93 दारुल शफा लखनऊ में संपन्न हुआ।

सोशल मीडिया प्लेटफार्म का दुरुपयोग कर भारत के खिलाफ अफवाह फैला रहीं देशविरोधी ताकतें–योगी

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत आपसी फूट, षडयंत्र के कारण गुलाम हुआ था। क्षेत्र, जाति व भाषा के नाम पर भारत को कमजोर करने वाली ताकतें आज भी फूट डाल रही हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म षड्यंत्र का माध्यम हो गया है। देशविरोधी ताकतें इसका दुरुपयोग कर भारत के खिलाफ अफवाहें फैला रही हैं। षड्यंत्र के तहत समाज को गुमराह करने करने का प्रयास हो रहा है। सीएम योगी रविवार को काकोरी ट्रेन एक्शन के 101वें वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में काकोरी शहीद स्मारक पर आयोजित शताब्दी समारोह कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। मुख्यमंत्री ने राष्ट्रनायकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आज काकोरी ट्रेन एक्शन की 101वीं तिथि है। भारत माता के महान सपूतों ने ब्रिटिश हुकूमत की चूलें हिलाकर चुनौती दी थी कि भारत की धरती गुलामी को हरगिज नहीं बर्दाश्त करेगी। इन क्रांतिकारियों ने 1857 के प्रथम स्वातंत्र्य समर से लेकर 1942 के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आंदोलन तक संघर्ष की लंबी श्रृंखला खड़ी की थी। अंग्रेज भारत के लोगों की गाढ़ी कमाई लूटकर ब्रिटेन ले जाना चाहते थे, लेकिन इसी स्थान पर 9 अगस्त 1925 को पं. राम प्रसाद बिस्मिल, ठाकुर रोशन सिंह, अशफाक उल्ला खां, चंद्रशेखर आजाद, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी जैसे क्रांतिकारियों ने खजाने को अपने कब्जे में लेकर आजादी की लड़ाई को नई ऊंचाइयां प्रदान की थीं। मुख्यमंत्री ने क्रांतिकारी शचींद्र नाथ बख्शी व मन्मथ नाथ गुप्ता का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि वे काशी में पैदा हुए थे। उन्हें आजीवन कारावास की सजा मिली। ब्रिटिशर ने उनकी जागीर को जब्त कर लिया था। शचींद्र नाथ सान्याल भी काशी में पैदा हुए और उन्होंने अंतिम सांस गोरखपुर में ली। पं. रामप्रसाद बिस्मिल, राजेंद्र नाथ लाहिड़ी, अशफाक उल्ला खां, ठाकुर रोशन सिंह को फांसी दी गई। चंद्रशेखर आजाद ने कहा था कि आजाद हमेशा आजाद रहेगा, अंतिम दम तक अंग्रेजों से लड़ते–लड़ते वह प्रयागराज की धरती पर शहीद हुए। इन क्रांतिकारियों का उद्देश्य भारत मां की आजादी के साथ ही गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर अंग्रेजों को भारत से भगाना और देश को आजाद कराना था। मंच पर मुख्यमंत्री का दर्द भी झलका।

महंगाई, खाद, बिजली और रोजगार से ध्यान भटका रही सरकार: सांसद अवधेश प्रसाद

लखनऊ। सपा सांसद अवधेश प्रसाद ने सरकार पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि सरकार महंगाई, खाद, बिजली और रोजगार से ध्यान भटका रही है। रामनगरी अयोध्या में सांसद अवधेश प्रसाद ने भाजपा सरकार पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि सरकार महंगाई, किसानों के खाद, बिजली, शिक्षा और रोजगार जैसे ज्वलंत मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए युवाओं पर लाठीचार्ज कर रही है। उन्होंने राम मंदिर चढ़ावा चोरी और एक दलित बेटी पर हुए हमले के मामलों में सरकार की निष्क्रियता पर सवाल उठाए। सिविल लाइन स्थित एक होटल में आयोजित प्रेसवार्ता में सांसद ने कहा कि देश का सबसे ज्वलंत मुद्दा महंगाई है। किसानों को खाद और बिजली की समस्या का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा और रोजगार के अवसर भी युवाओं के लिए एक बड़ी चुनौती बने हुए हैं। आरोप लगाया कि सरकार इन वास्तविक समस्याओं को छिपाने के लिए युवाओं के विरोध प्रदर्शनों को बलपूर्वक दबा रही है। यह सरकार की जनविरोधी नीतियों का परिणाम है। राम मंदिर चढ़ावा चोरी प्रकरण पर बोलते हुए सांसद अवधेश प्रसाद ने नितिन मिश्रा का नाम लिया। कहा कि नितिन मिश्रा निर्माण कार्य में शामिल थे। आरोप लगाया कि सभी संबंधित लोगों ने मिलकर इतनी बड़ी चढ़ावा चोरी को अंजाम दिया है। दावा किया कि इस मामले में निचले स्तर के लोगों को फंसाया जा रहा है। उन्होंने इस प्रकरण की निष्पक्ष जांच की मांग की। सांसद अवधेश प्रसाद ने एक 25 साल की दलित बेटी पर हुए हमले का जिक्र किया। कहा कि कुछ लोगों ने जानबूझकर उस पर गाड़ी चढ़ा दी। इसके बाद दोबारा गाड़ी चढ़ाकर उसे गंभीर रूप से घायल किया गया। यह घटना 5 तारीख को हुई थी और एफआईआर भी दर्ज की गई थी।

स्टेटमेन्ट टुडे

(राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक) लखनऊ
10 अगस्त 2026 सोमवार

ब्रिटिश राज के खिलाफ सबसे बड़ा आन्दोलन था अगस्त क्रान्ति : रस्तोगी

– 9 अगस्त 1942 अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन की वर्षगांठ मनायी गयी – फलदार व सायादार पौधे रोपित कर राष्ट्र निर्माण का लिया संकल्प

रायबरेली। जनपद के विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा 9 अगस्त 1942 अंग्रेजों भरत छोड़ो आन्दोलन की वर्षगांठ मनायी गयी। इस अवसर पर फलदार एवं सायादार पौधे बैकुण्ठ धाम में रोपित कर राष्ट्र निर्माण का संकल्प लिया गया। उ0प्र0 उद्योग व्यापार प्रतिनिध मण्डल के प्रदेश संगठन मंत्री मुकेश रस्तोगी ने कहा कि अगस्त क्रांति (भारत छोड़ो आन्दोलन) की शुरूआत 8 अगस्त 1942 को बाम्बे के अगस्त क्रांति मैदान (गोवालिया टैंक मैदान) में महात्मा गांधी के आवाहन पर हुई थी। गांधी जी ने यहां करो या मरो का नारा दिया था। युसूफ मेहर अली द्वारा अंग्रेजों भारत छोड़ो का नारा दिया गया था। 9 अगस्त की सुबह तक सभी स्वतन्त्रता सेनानी ब्रिटिश हुकूमत द्वारा गिरिफ्तार कर लिए गए थे। नेताओं की गिरिफ्तारी के बाद आमजन ने आन्दोलन की कमान संभाल ली थी। ब्रिटिश राज के खिलाफ यह सबसे बड़ा आन्दोलन था। सेन्ट्रल बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष ओपी यादव ने कहा कि अगस्त क्रान्ति आन्दोलन के साथ देश में क्रांतिकारी संघर्ष की नयी धारा संगठित हुई बढ़े। उनके क्रांतिकारी कारनामो की गाथा और बलिदानों से हमारा स्वतन्त्रता आन्दोलन गौरवान्वित है। गिलहरी प्रयास मानव धर्म मिशन के अध्यक्ष डा0 आदर्श शुक्ला ने कहा कि इस ऐतिहासिक दिन में पौधे रोपित कर राष्ट्र निर्माण में संकल्प का एक लघु प्रयास है। इन्हीं पेड़ों के आक्सीजन से मानव जीवन संचालित होता है। संत गाडगे सेवक कमलेश चौधरी ने कहा कि 1942 की जनक्रांति ही थी, जहाँ से रियासतों में आजादी के आन्दोलन की संगठित शुरूवात मानी जा सकती है। ब्राहम्ण समाज सेवा संगठन के जिला सचिव राजेन्द्र कुमार बाजपेयी ने कहा असहयोग आन्दोलन के समय तक यहां प्रजामंडल तक नहीं थे। 1942 में यहां आजाद मोर्चे ने आन्दोलन की बागडोर संभाली। सेवारत स्वर्णकार संस्थान के संरक्षक भौमेश कुमार ने कहा कि अगस्त क्रांति आन्दोलन 1930 के दशक से प्रारम्भ से ही जन आक्रोश की क्रांतिकारी अभिव्यक्ति थी। इस अवसर पर पूर्व प्रधान भोला चौधरी, सेवानिवृत्त कर्मचारी संघ के अध्यक्ष देवनाथ पाल, राजेन्द्र कुमार, बैकुण्ठ धाम के सेवादार बाबा सोनी, महिला कर्मचारी राजकुमारी आदि लोगों ने अपने–अपने विचार व्यक्त किये।

सड़क हादसे में घायल किसान की इलाज के दौरान मौत

उरई/जालौन,संवाददाता। जालौन के उरई कोतवाली क्षेत्र में शनिवार रात एक सड़क हादसे में 62 वर्षीय किसान ओमप्रकाश द्विवेदी की मौत हो गई। रगेदा गांव निवासी ओमप्रकाश को उर्वशी फैक्ट्री के पास एक तेज रफ्तार एक्सयूवी–300 ने टक्कर मार दी थी। गंभीर रूप से घायल ओमप्रकाश को पहले स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, जहां से उन्हें झांसी मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया। उपचार के दौरान उनकी मृत्यु हो गई। जानकारी के अनुसार, ओमप्रकाश द्विवेदी खेती–किसानी कर अपने परिवार का भरण–पोषण करते थे। बताया जा रहा है कि वह किसी काम से उर्वशी फैक्ट्री के पास गए थे, तभी यह हादसा हुआ। एक्सयूवी–300 की टक्कर इतनी भीषण थी कि ओमप्रकाश सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। हादसे के बाद मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। स्थानीय लोगों ने तत्काल पुलिस को सूचना दी और घायल किसान को अस्पताल पहुंचाया। चिकित्सकों ने उनकी गंभीर हालत को देखते हुए उन्हें झांसी मेडिकल कॉलेज रेफर किया था। परिजनों द्वारा झांसी ले जाने के बाद भी उपचार के दौरान उन्हें बचाया नहीं जा सका। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस हादसे में शामिल ग्न्ट–300 और उसके चालक की तलाश कर रही है। इसके लिए आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाली जा रही है और प्रत्यक्षदर्शियों से भी जानकारी जुटाई जा रही है। ओमप्रकाश की मृत्यु की खबर रगेदा गांव पहुंचते ही शोक की लहर दौड़ गई। मृतक के पुत्र प्रदीप द्विवेदी ने बताया कि इस घटना से परिवार सदमे में है। पुलिस मामले की आगे की जांच कर रही है।

करंट लगने से किसान की मौत

उरई/जालौन,संवाददाता। जालौन कोतवाली क्षेत्र के शहजादपुरा गांव में रविवार को बिजली का करंट लगने से 42 साल के किसान हरपाल की मौत हो गई। वह अपने घर पर बिजली की लाइट ठीक कर रहे थे, तभी यह हादसा हुआ। जानकारी के अनुसार, शहजादपुरा निवासी हरपाल खेती का काम करते थे। रविवार को जब वह अपने घर में बिजली की लाइट ठीक कर रहे थे, तभी अचानक विद्युत करंट की चपेट में आ गए। करंट का झटका इतना तेज था कि वह गंभीर रूप से झुलसकर जमीन पर गिर पड़े। परिजनों ने आनन–फानन में उन्हें बचाने का प्रयास किया, लेकिन तब तक उनकी मौत हो चुकी थी। हरपाल अपने पीछे पत्नी और दो बच्चों को छोड़ गए हैं। परिवार का रो–रोकर बुरा हाल है। मृतक हरपाल परिवार की जिम्मेदारियां संभालने के साथ खेती के जरिए घर का भरण–पोषण करते थे। घटना की सूचना पुलिस को दी गई। जालौन कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की जानकारी जुटाई। पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पंचनामा भरने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस हादसे के कारणों की जांच कर रही है। किसान की अचानक हुई मौत से गांव में शोक का माहौल है।

झमाझम बारिश से सड़कों पर भरा पानी

उरई/जालौन,संवाददाता। जालौन जिले में दो दिनों की उमस भरी गर्मी और तेज धूप के बाद रविवार को हुई बारिश से लोगों को कुछ देर के लिए राहत मिली। दोपहर में अचानक आसमान में बादल छा गए और देखते ही देखते तेज बारिश शुरू हो गई। लगभग 10 मिनट तक हुई इस झमाझम बारिश से सड़कों पर पानी भर गया। तेज बारिश के कारण बाजारों में भी कुछ समय के लिए सन्नाटा छा गया और लोग बारिश से बचने के लिए दुकानों व अन्य सुरक्षित स्थानों पर रुकते दिखे। बारिश के बाद मौसम सुहावना हो गया, जिससे लोगों ने राहत महसूस की। हालांकि, बारिश रुकने के कुछ ही देर बाद आसमान साफ हो गया और तेज धूप निकल आई। धूप निकलते ही वातावरण में फिर से उमस बढ़ गई, जिससे लोगों को दोबारा गर्मी का सामना करना पड़ा। बारिश से तापमान में थोड़ी गिरावट दर्ज की गई, लेकिन उमस के कारण लोगों की परेशानी बनी रही। यह बारिश धान और तिल की फसल करने वाले किसानों के लिए भी राहत लेकर आई है। खेतों में खड़ी फसलों को बारिश से पर्याप्त नमी मिलने की उम्मीद है। किसान लंबे समय से अच्छी बारिश का इंतजार कर रहे थे। इस बारिश से फसलों की सिंचाई पर होने वाला खर्च भी कम हो सकता है। किसानों का कहना है कि यदि आने वाले दिनों में रुक–रुककर अच्छी बारिश होती रही तो धान और तिल सहित अन्य खरीफ फसलों को काफी फायदा होगा।

दालमंडी मार्ग के चौड़ीकरण का हुआ भूमिपूजन, नए रूप में विकास के साथ दिखेगी दालमंडी

वाराणसी। पूर्वांचल का प्रसिद्ध मार्केट दालमंडी मार्ग के चौड़ीकरण एवं सुदृढ़ीकरण की बहुप्रतीक्षित परियोजना का रविवार को विधिवत भूमिपूजन किया गया। शहर दक्षिणी विधायक डॉ. नीलकंठ तिवारी ने आयोजित कार्यक्रम में भूमिपूजन कर निर्माण कार्य का शुभारंभ कराया। ध्वस्तीकरण की कार्रवाई के बाद अब दालमंडी मार्ग के निर्माण और विकास का रास्ता साफ हो गया है। परियोजना के तहत दालमंडी मार्ग को चौड़ा कर यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के साथ क्षेत्र को आधुनिक सुविधाओं से लैस किया जाएगा। सड़क के साथ पैदल यात्रियों के लिए फुटपाथ, आधुनिक स्ट्रीट लाइट, हरियाली तथा भूमिगत यूटिलिटी जैसी सुविधाएं विकसित की जाएंगी। चौड़ीकरण की जद में आने वाले भवनों को हटाने की कार्रवाई पहले ही पूरी की जा चुकी है। प्रभावित भवन स्वामियों को मुआवजा दिए जाने के बाद मार्ग को निर्माण के लिए खाली कराया गया। अब भूमिपूजन के साथ परियोजना के निर्माण कार्य में तेजी आने की उम्मीद है। दालमंडी मार्ग शहर के व्यस्ततम क्षेत्रों में शामिल है। मार्ग चौड़ा होने से यहां यातायात दबाव कम होने के साथ स्थानीय लोगों और राहगीरों को भी सुविधा मिलने की उम्मीद है। परियोजना पूरी होने के बाद दालमंडी का स्वरूप आधुनिक और व्यवस्थित नजर आएगा।

अग्रशील इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड ने लखनऊ में आश्रयम फेज–2 किया लॉन्च

लखनऊ,संवाददाता। उत्तर भारत के प्रमुख रियल एस्टेट डेवलपर्स में शामिल अग्रशील इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड ने लखनऊ में अपनी इंटीग्रेटेड प्लॉटेड टाउनशिप आश्रयम फेज–प्प लॉन्च की है। यह लखनऊ में विकसित की जा रही इस टाउनशिप का दूसरा चरण है। परियोजना में आरईआरए के तहत पंजीकृत और बिक्री के लिए उपलब्ध 190 आवासीय प्लॉट शामिल हैं। पहले चरण की सफलतापूर्वक बिक्री पूरी होने के बाद यह टाउनशिप के विस्तार की दिशा में अगला कदम है। लखनऊ की पहली वेकेशन–थीम वाली टाउनशिप के रूप में बनाई गई आश्रयम को खुले स्थानों, मनोरंजन सुविधाओं और सुनियोजित बुनियादी ढांचे पर केंद्रित एक मास्टर–प्लान्ड रेजिडेंशियल कम्युनिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसका पहला चरण 23 एकड़ में फैला था, जिसमें 276 आवासीय प्लॉट शामिल थे और यह चरण पूरी तरह बिक चुका है। आश्रयम फेज–2 लगभग 11.25 एकड़ (45,397 वर्ग मीटर) में फैला है। इसे लखनऊ विकास प्राधिकरण (एलडीए) और उत्तर प्रदेश रेरा से मंजूरी प्राप्त है। पूरी आश्रयम टाउनशिप में लगभग 250 करोड़ रुपये का कुल निवेश किया जा रहा है। इसमें से फेज–प्प में अनुमानित 100 करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा। यह निवेश प्रमोटर इक्विटी और आरईआरए द्वारा निर्धारित परियोजना खाते में जमा किए गए निर्माण–आधारित ग्राहक अग्रिम भुगतान के माध्यम से किया जा रहा है।डेवलपर ने 1 से 15 अगस्त 2026 तक चलने वाली शुरुआती लॉन्च पेशकश के तहत 26 प्लॉट लॉन्च किए हैं। इनसे लगभग 22.6 करोड़ रुपये की बिक्री आय होने का अनुमान है। पहले 11 बुकिंग के लिए बेसिक सेल प्राइस 6,250 रुपये प्रति वर्ग फुट और इसके बाद 6,400 रुपये प्रति वर्ग फुट रखा गया है। शुरुआती लॉन्च ऑफर के तहत क्रमशः 4 प्रतिशत और 2 प्रतिशत तक की छूट भी दी जा रही है।अग्रशील इंफ्राटेक प्राइवेट लिमिटेड की सीईओ प्रेक्षा सिंह ने कहा, "आश्रयम के पहले चरण को मिली प्रतिक्रिया ने परियोजना की सोच और लखनऊ में संगठित प्लॉटेड डेवलपमेंट की बढ़ती मांग को लेकर हमारे भरोसे को और मजबूत किया है। दूसरा चरण इसी यात्रा का स्वाभाविक विस्तार है। टाउनशिप में अतिरिक्त प्लॉट उपलब्ध कराने के साथ–साथ हमने मनोरंजन सुविधाओं को भी और बेहतर किया है।

9 अगस्तः काकोरी ट्रेन एक्शन-डे स्पेशल

70 साल तक बेबस रही शहीद की धरती, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मिटा दिया तीन पीढ़ियों का दर्द

लखनऊ,संवाददाता। देश की आजादी के लिए हंसते–हंसते फांसी का फंदा चूमने वाले अमर शहीद क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह की जन्मभूमि आजाद भारत में भी दशकों तक विकास की मुख्यधारा से कटे रहने का दर्द सहती रही। जिस गांव की मिट्टी ने देश को ऐसा वीर सपूत दिया, उसी गांव की तीन पीढ़ियां हर साल बारिश के मौसम में दुनिया से कट जाने की मजबूरी झेलती रहीं। सरकारें बदलती रहीं, लेकिन उनकी यह पीड़ा बनी रही। उनका दर्द महसूस किया मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने। उत्तर प्रदेश में सरकार बनने पर जैसे ही यह मामला सीएम योगी के संज्ञान में आया, उन्होंने खन्नौत नदी पर पीपे के बजाय पक्के पुल का निर्माण कराया। मुख्यमंत्री पुल के उद्घाटन पर स्वयं शहीद के पैतृक गांव नवादा पहुंचे और ठाकुर रोशन सिंह के परिवार से मिले। वहां मौजूद ग्रामीणों की आंखों में सीएम के प्रति कृतज्ञता के भाव से आंसू छलक उठे। यह सिर्फ एक पुल का उद्घाटन नहीं, बल्कि शहादत को मिले सम्मान और वर्षों की उपेक्षा के अंत का भावुक क्षण था।भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह का नाम अमर बलिदानियों में दर्ज है। उनका जन्म 19 दिसंबर 1892 को शाहजहांपुर जिले के नवादा गांव में ठाकुर जंगी सिंह और कौशल्या देवी के घर हुआ था। बचपन से ही वह अदम्य साहसी, कुशल पहलवान व अचूक निशानेबाज थे। वह युवावस्था में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से जुड़े और बाद में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के सक्रिय क्रांतिकारी बन गए। 1922 में चौरी–चौरा कांड के विरोध में बरेली में हुए प्रदर्शन के दौरान अंग्रेजों ने लाठीचार्ज किया। इसी दौरान रोशन सिंह भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़े और एक अंग्रेज अधिकारी की बंदूक छीन ली। उन्होंने हवा में फायरिंग कर लाठीचार्ज रुकवाया। इस घटना के बाद ब्रिटिश सरकार ने उन्हें दो वर्ष की कठोर कैद की सजा दी। जेल से रिहा होने के बाद उनका झुकाव पूरी तरह क्रांतिकारी आंदोलन की ओर हो गया और अंग्रेज हुकूमत की आंख की किरकिरी बन गए।दिसंबर1924 में एचआरए ने संगठन के लिए धन जुटाने के उद्देश्य से पीलीभीत की बिसलपुर तहसील के बमरौली गांव में कार्रवाई की। गोलीबारी में एक व्यक्ति की मौत हो गई। ठाकुर रोशन सिंह पर हत्या का मामला दर्ज किया गया, लेकिन वह अंग्रेजों के हाथ नहीं आए। बाद में 1925 के काकोरी कांड के बाद ब्रिटिश सरकार ने ठाकुर रोशन सिंह को गिरफ्तार कर मुकदमे में शामिल किया। भले ही वह काकोरी ट्रेन लूट की घटना में प्रत्यक्ष रूप से मौजूद नहीं थे, लेकिन संगठन से जुड़े होने के कारण उन्हें भी पंडित राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां व राजेंद्र नाथ लाहिड़ी के साथ दोषी ठहराया गया।अदालत में जब उन्हें विभिन्न धाराओं में सजा सुनाई जा रही थी, तब रोशन सिंह ने निर्भीक होकर कहा, "मुझे भी वही सजा दो जो बिस्मिल को मिली है।" आखिरकार जज ने उन्हें फांसी की सजा सुना दी। 19 दिसंबर 1927 को प्रयागराज की नैनी जेल में उन्होंने गीता का पाठ करने के उपरांत वंदे मातरम् का गगनभेदी उद्घोष करते हुए फांसी के फंदे को चूम लिया।देश आजाद हो गया, लेकिन क्रांतिकारी ठाकुर रोशन सिंह का पैतृक गांव नवादा दशकों तक बुनियादी सुविधाओं से वंचित रहा। खन्नौत नदी पर पुल न होने के कारण हर भारी बारिश और बाढ़ की वजह से पूरा इलाका चार से पांच महीने तक मुख्य मार्गों से कट जाता था। मरीज अस्पताल नहीं पहुंच पाते थे, बच्चों की पढ़ाई रुक जाती थी और किसानों की फसल समय पर बाजारों तक नहीं पहुंच पाती थी। यह दर्द गांव की एक नहीं, बल्कि तीन पीढ़ियों ने लगातार दशकों तक झेला।मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के उत्तर प्रदेश की बागडोर संभालने के कुछ समय बाद ही नवादा गांव के लोग उनसे मिले। इन लोगों ने मुख्यमंत्री को गांव की पीड़ा से अवगत कराते हुए खन्नौत नदी पर पीपे का पुल बनवाने का अनुरोध किया। अमर शहीद के गांव की उपेक्षा से द्रवित सीएम ने 25 फरवरी 2018 को शाहजहांपुर में विकास परियोजनाओं के साथ खन्नौत नदी पर पक्के पुल, सड़कों व डिग्री कॉलेज जैसी परियोजनाओं को मंजूरी दी। पक्का पुल बनने के बाद 30 दिसंबर 2018 को मुख्यमंत्री स्वयं नवादा गांव में ठाकुर रोशन सिंह के पैतृक घर पहुंचे। मुख्यमंत्री ने शहीद की प्रतिमा पर श्रद्धांजलि अर्पित की और परिवार के बुजुर्गों का सम्मान किया। योगी आदित्यनाथ का भाव देखकर वर्षों से उपेक्षा झेल रहे शहीद के परिजन और ग्रामीण भावुक हो उठे। कई बुजुर्गों की आंखों से आंसू छलक पड़े।

नहर में पानी नहीं, इंद्रदेव भी मेहरबान कम

लखनऊ,संवाददाता। नहरों में पानी नही,इंद्रदेव भी कम मेहरबान लग रहे हैं तो किसानों का भला कैसे हो। सरकारी दावे तो किसानों की आय दोगुनी से लेकर चौगुनी तक के हैं लेकिन धरातल पर यानि खेत पर जाकर निराश कृषक का दर्द समझने वाला कोई नहीं।किसान कहते हैं कि जबसे जल शक्ति मंत्रालय बना है तबसे सिंचाई व्यवस्था का बंटाधार हो गया है। सींचपाल, अमीन और जिलेदार के पद समाप्त हो गए,केवल अभियंता वर्ग बचा है सिंचाई विभाग में, जो एसी रूम से बाहर निकलने से कतराता है। वो भी क्या करें क्योंकि जब नहर में पानी ही नही तो नहर कटान या खांदी होने का झंझट ही नही।नहर की सफाई तो ठेकेदार करायेंगे ही भले ही कागजी हो। महकमे के बड़े ओहदेदार कहते हैं कि सरकार का लक्ष्य और दावा हेड से टेल तक पानी पहुंचाने का है। लक्ष्य तो है लेकिन एक तो नहर में पानी आता नही और आ भी जाये तो हेड से आगे बढ़ नही पाता।तमाम माइनर बिल्कुल बेकार हो गई, उनमे केवल झाड़ झंखाड़ उगी है।मवेशी चरते हैं।बाराबंकी प्रखंड शारदा नहर की प्रतापगंज ब्रांच के कोटवा सड़क रजवाहे के आखिर में दो माइनर काशीपुर और ताशीपुर हैं जिनमें अर्से से पानी नही पहुंचा। इन माइनरों से जुड़े किसानों का साफ कहना है कि पानी तो दे नही सकते तो इन माइनरों को पटवा दिया जाए ताकि जहरीले जीव जंतु न पनपे और जमीन सम्बन्धित गांवों के लोगों के सार्वजनिक काम में आये। कोटवा सड़क ,चुरई का पुरवा, किठूरी,भवनियापुर,सनाकापुर,खेवली,पिपरिहा, लालपुरवा,अमरगंज,लम्बाउवा, कल्यानपुरवा,नरोखर, मोहम्मदपुर कीरत,बड़ेला,नरायनपुर, काशीपुर, दिलोना,भगवान पुर आदि सैकड़ों गांवों के लोग परेशान हैं।अब केवल उन्हीं किसानों के खेतों में अनाज पैदा हो पा रहा है जिनके खेत में निजी समरसेबल पम्प लगा है। हर किसान समरसेबल पम्प तो लगा नही सकता। छोटे छोटे कृषकों का बुरा हाल है।किसानों की आमदनी असल में बहुत घट गई है।लोगों का कहना है कि सबसे अच्छा तब था जब सरकार हमसे सिचाई शुल्क लेती थी और निर्धारित रोस्टर के मुताबिक पानी देती थी।किसानों का सीधे अधिशासी अभियंता से भले सम्पर्क नही होता था लेकिन हल्के का पतरौल यानि सींचपाल जरूर बराबर गांव आता था और किसानों की जरूरत समझता था।सिचाई मुफ्त करके सरकार ने वाहवाही तो लूटी लेकिन जब पानी ही नही दे सकती तो क्या फायदा।कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही उपज बढ़ाने में जुटे हैं,खाद बीज पर उनका खास फोकस है लेकिन जब नहर में पानी नही आयेगा तो उपज बढ़ने की उम्मीद कहां? इस बार सूखा पड़ने के आसार नजर आ रहे हैं, पानी बिन सब सून हो जायेगा।सिचाई विभाग और कृषि विभाग के अफसर मिलकर सिचाई का रोस्टर बनाते हैं।

आईएएस,आईपीएस और आईएफएस अधिकारी हर माह विद्यार्थियों से करेंगे संवाद

इंटरमीडिएट के विद्यार्थियों को करियर और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए प्रदान करेंगे मार्गदर्शन

लखनऊ,संवाददाता। प्रदेश के युवाओं के सर्वांगीण विकास, उनकी क्षमताओं के समुचित उपयोग और उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, रोजगार एवं उद्यमिता सहित विभिन्न क्षेत्रों में बेहतर अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से योगी सरकार एक महत्वपूर्ण पहल करने जा रही है। इसके तहत भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा एवं भारतीय वन सेवा के युवा अधिकारी इंटरमीडिएट स्तर के विद्यार्थियों के साथ नियमित संवाद कर उन्हें प्रेरित करेंगे और करियर संबंधी मार्गदर्शन प्रदान करेंगे। अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा पार्थ सारथी सेन शर्मा ने कार्यक्रम के क्रियान्वयन एवं अनुश्रवण के लिए महानिदेशक स्कूल शिक्षा को प्रभावी अनुश्रवण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। मंडलायुक्तों को निर्देशित किया गया है कि वे उक्त कार्यक्रम की समय–समय पर अपने स्तर पर समीक्षा करें। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, उत्तर प्रदेश, समस्त मंडलीय संयुक्त शिक्षा निदेशक माध्यमिक तथा समस्त जिला विद्यालय निरीक्षकों को भी निर्देश जारी किए गए हैं। जिला विद्यालय निरीक्षकों से अपेक्षा की गई है कि वे संबंधित विद्यालयों को कार्यक्रम के संबंध में अपने स्तर से अवगत कराएं। मुख्य सचिव की ओर से सभी जिलाधिकारियों को जारी निर्देश में कहा गया है कि प्रत्येक जिले में तैनात आईएएस, आईपीएस, और आईएफएस के युवा अधिकारी हर माह कम से कम एक इंटरमीडिएट स्तर के विद्यालय का भ्रमण कर विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित करें। कार्यक्रमों में सहभागितापूर्ण चर्चा और प्रश्नोत्तर को प्राथमिकता दी जाएगी। यूपीएससी, यूपीपीएससी, यूपीएसएसएससी, एएससी, एनडीए, जेईई, नीट और सीयूईटी समेत राज्य स्तरीय पात्रता परीक्षाओं तथा उत्तर प्रदेश शिक्षा सेवा चयन आयोग सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के संबंध में भी विद्यार्थियों को जानकारी और मार्गदर्शन दिया जाएगा। कार्यक्रमों में विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, उद्यमिता और स्टार्टअप से जुड़े अवसरों की जानकारी भी दी जाएगी। इसके अलावा केंद्र एवं राज्य सरकार की युवाओं से संबंधित प्रमुख योजनाओं से उन्हें अवगत कराया जाएगा।

तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण के वर्कशॉप का संचालन हुआ

अब्दुल बासिद खां
ब्यूरो , एसटी न्यूज़,लखनऊ,उत्तर प्रदेश

PH समिट लखनऊ 2026 की एक खास विशेषता 9 अगस्त 2026 को आयोजित तीन विशेष हैंड्स-ऑन वर्कशॉप्स रहीं, जिनमें डेलीगेट्स को पल्मोनरी हाइपरटेंशन के मूल्यांकन और प्रबंधन में उपयोग होने वाली महत्वपूर्ण तकनीकों का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

इकोकार्डियोग्राफी वर्कशॉप 1

डॉ. अमित आनंद और उनकी टीम के नेतृत्व में आयोजित इस वर्कशॉप में 30 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें पल्मोनरी हाइपरटेंशन में इकोकार्डियोग्राफिक असेसमेंट और राइट हार्ट फंक्शन के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

राइट हार्ट कैथीटेराइजेशन वर्कशॉप 2

प्रो. डॉ. वेद प्रकाश और उनकी टीम ने इस वर्कशॉप का संचालन किया, जिसमें 28 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें इनवेसिव हेमोडायनामिक असेसमेंट और पल्मोनरी हाइपरटेंशन की पुष्टि के लिए राइट हार्ट कैथीटेराइजेशन के व्यावहारिक पहलुओं पर प्रशिक्षण दिया गया।

कार्डियोपल्मोनरी एक्सरसाइज़ टेस्टिंग (CPET) वर्कशॉप 3

डॉ. बाशा जे. खान और उनकी टीम के नेतृत्व में आयोजित इस वर्कशॉप में लगभग 34 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें CPET की मदद से पल्मोनरी हाइपरटेंशन के मरीजों की एक्सरसाइज़ क्षमता और फंक्शनल स्टेटस के आकलन पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

इन वर्कशॉप्स का विशेष महत्व इसलिए रहा क्योंकि पल्मोनरी हाइपरटेंशन के सही निदान और जोखिम के आकलन के लिए केवल सैद्धांतिक ज्ञान पर्याप्त नहीं है; इन जांचों को सही तरीके से करना और उनकी व्याख्या करना भी उतना ही महत्वपूर्ण है। हैंड्स-ऑन प्रशिक्षण के माध्यम से प्रतिभागियों को विशेषज्ञों की देखरेख में वास्तविक क्लिनिकल परिस्थितियों के अनुरूप अपनी तकनीकी दक्षता बढ़ाने का अवसर मिला। इस तरह के प्रशिक्षण से समय पर निदान, बेहतर जोखिम आकलन और मरीजों के लिए अधिक सटीक उपचार निर्णय लेने में मदद मिल सकती है।

8 और 9 अगस्त को पी०एच० समिट का आयोजन ।

देश-विदेश से विशेषज्ञों का लखनऊ में जमावड़ा ।

दो दिन पल्मोनरी हाइपरटेंशन पर मंथन ।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता अक्सर चलता देर से ।इसके लक्षणों का रखें ध्यान ।

सांस फूलना हो सकता है पल्मोनरी हाइपरटेंशन का प्रथम संकेत ।

बीमारी की जल्द पहचान से समय रहते सम्भव है इलाज ।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता देर से चलने पर हार्ट लंग ट्रांसप्लांट ही है अंतिम उपचार ।

बीमारी का पता देर से चलने पर 3 साल जीवित रहने की सम्भावना रहती है 55 प्रतिशत ।

PH समिट 2026 का उद्देश्य पल्मोनरी हाइपरटेंशन के क्षेत्र में हुए नये अध्ययन को मरीजों के इलाज तक है पहुंचाना। इस समिट से चिकित्सक कर सकेंगे बेहतर इलाज ।

-प्रो० वेद प्रकाश

महत्वपूर्ण तथ्य एवं आंकडे:-

पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन (PAH), का ग्लोबल एज-स्टैंडर्डाइज़्ड प्रसार (prevalence) प्रति 100,000 आबादी पर लगभग 2.28 मामले है।

अमेरिका में पल्मोनरी हाइपरटेंशन का सबसे प्रमुख कारण बाएं हिस्से की हृदय संबंधी स्थितियां, जैसे कि लेफ्ट हार्ट फेलियर, के कारण होता है।

भारत में, पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन (PAH) का अनुमानित प्रसार प्रति लाख आबादी पर 0.15 है, जिसमें से 0.06 प्रतिशत मामले इडियोपैथिक (बिना किसी ज्ञात कारण के) हैं।

भारत में अस्पताल-आधारित रिसर्च के अनुसार, जन्मजात हृदय रोग, कोरोनरी आर्टरी डिज़ीज़, रूमैटिक हार्ट डिज़ीज़ और क्रोनिक ऑब्सट्रक्टिव पल्मोनरी डिज़ीज़ (COPD) जैसी पहले से मौजूद बीमारियों वाले लोगों में PH के मामले ज़्यादा होते हैं।

गुर्दे रोग के पीड़ित मरीजों में कंज़र्वेटिव मैनेजमेंट, हीमोडायलिसिस (HD) या कंटीन्यूअस एम्बुलेटरी पेरिटोनियल डायलिसिस (CAPD) से गुज़र रहे 100 मरीज़ों की एक स्टडी में, पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) का कुल प्रसार 41% पाया गया।

पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन (PAH) वाले लगभग 70-80% मरीज़ों में बीमारी का पता तब चलता है जब वे पहले ही बीमारी के गंभीर चरण (WHO फंक्शनल क्लास III या IV) में पहुँच चुके होते हैं।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता अक्सर देर से चलता है; लक्षण शुरू होने से लेकर बीमारी का पता चलने तक का औसत समय 2 साल से ज़्यादा होता है।

इलाज में तरक्की के बावजूद, बिना इलाज वाले पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन (PAH) में मरीज़ के जीवित रहने की औसत अवधि 3 साल से कम होती है, लक्षण शुरू होने और बीमारी का पता चलने के बीच औसतन 1.5-2 साल की देरी होती है, जिसका मुख्य कारण यह है कि सांस फूलने और थकान जैसे शुरुआती लक्षण नजर अंदाज कर दिये जाते हैं।

इडियोपैथिक PAH पुरुषों की तुलना में महिलाओं में 2-4 गुना ज़्यादा होता है।

एक अध्ययन के अनुसार, बीमारी की गंभीरता और इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं के आधार पर, इलाज का सालाना खर्च ?2 लाख से लेकर ?20 लाख से ज़्यादा तक हो सकता है; खासकर उन मरीज़ों के लिए जिन्हें कॉम्बिनेशन थेरेपी या प्रोस्टासाइक्लिन-बेस्ड इलाज की ज़रूरत होती है।

जिन मरीज़ों की बीमारी बढ़ चुकी है और मेडिकल थेरेपी से ठीक नहीं हो रही है, उनके लिए लंग ट्रांसप्लांटेशन या हार्ट-लंग ट्रांसप्लांटेशन ही पक्का इलाज का विकल्प है।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन एक ऐसी स्थिति है जो फेफड़ों की रक्त वाहिकाओं को प्रभावित करती है और तब होती है जब फेफड़ों में रक्तचाप सामान्य से अधिक हो जाता है। इसलिए, हृदय को फेफड़ों में रक्त पंप करने के लिए अधिक प्रयास करना पड़ता है। सांस फूलना, चक्कर आना और सीने में दर्द कुछ ऐसे लक्षण हैं जो हृदय पर इस बढ़े हुए दबाव के कारण हो सकते हैं।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन के प्रकार

ग्रुप 1= पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन (PAH)

ग्रुप 2= बाईं ओर की हृदय रोग के कारण पल्मोनरी हाइपरटेंशन

ग्रुप 3= हाइपोक्सिया / फेफड़ों की बीमारी के कारण पल्मोनरी हाइपरटेंशन

ग्रुप 4= क्रोनिक थ्रोम्बोएम्बोलिक पल्मोनरी हाइपरटेंशन (CTEPH)

ग्रुप 5=अज्ञात/कई कारणों से होने वाला पल्मोनरी हाइपरटेंशन

पल्मोनरी हाइपरटेंशन के कारण

पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) का सटीक कारण ज्ञात नहीं है, लेकिन यह कुछ ऐसी चिकित्सीय स्थितियों के कारण हो सकता है जो फेफड़ों की रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुंचाती हैं, अवरुद्ध करती हैं या प्रभावित करती हैं। इससे पल्मोनरी धमनियों में उच्च रक्तचाप हो जाता है। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित है:-

बाईं ओर की हृदय रोग

फेफड़ों की बीमारियां और ऑक्सीजन का कम स्तर

फेफड़ों में रक्त के थक्के

पल्मोनरी धमनी में परिवर्तन और अन्य चिकित्सीय स्थितियां= पल्मोनरी हाइपरटेंशन पल्मोनरी धमनियों की छोटी शाखाओं में परिवर्तन के परिणामस्वरूप हो सकता है, जो अक्सर जन्मजात हृदय दोष, HIV संक्रमण, पोर्टल हाइपरटेंशन, संयोजी ऊतक रोगों (जैसे स्क्लेरोडर्मा), या कुछ दवाओं के कारण होते हैं।

कुछ मामले वंशानुगत (heritable) होते हैं या बिना किसी ज्ञात कारण (idiopathic) के होते हैं।

अन्य दुर्लभ कारण= सूजन संबंधी स्थितियां जैसे सारकोइडोसिस, रक्त विकार जैसे सिकल सेल रोग, चयापचय संबंधी विकार जैसे थायरॉयड रोग, क्रोनिक किडनी रोग (CKD), इत्यादि सामान्य कारण हैं।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन के लक्षण

सूखी खांसी या खांसी के साथ खून आना

सीने में दर्द

कमज़ोरी

जी मिचलाना और उल्टी होना

पेट, पैरों या पंजों में सूजन

सांस फूलना

चक्कर आना, जिससे बेहोशी भी हो सकती है

साइनोसिस (होंठ और त्वचा का रंग नीला पड़ना)

थकान

पल्मोनरी हाइपरटेंशन के जोखिम कारक

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का जल्द पता लगाने और इसकी रोकथाम के लिए जोखिम कारकों को जानना ज़रूरी है। जिन लोगों में इनमें से एक या ज़्यादा जोखिम कारक हैं, उन्हें अपनी सेहत पर बारीकी से नज़र रखनी चाहिए। अगर उन्हें बिना किसी साफ़ वजह के सांस फूलने, थकान या सीने में दर्द जैसे लक्षण महसूस हों, तो डॉक्टर से सलाह लेनी चाहिए। इन जोखिम कारकों में शामिल हैं=

उम्र= पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) किसी भी उम्र में हो सकता है, लेकिन इसका पता अक्सर 30 से 60 साल की उम्र के बीच चलता है। उम्र बढ़ने के साथ दिल और रक्त वाहिकाओं में बदलाव के कारण इसका जोखिम बढ़ जाता है।

पर्यावरण लंबे समय तक हानिकारक पदार्थों (जैसे एस्बेस्टस) के संपर्क में रहने या परजीवियों (पैरासाइट्स) से होने वाले संक्रमण से फेफड़ों की रक्त वाहिकाओं को नुकसान पहुँच सकता है, जिससे पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) का जोखिम बढ़ जाता है।

पारिवारिक इतिहास और जेनेटिक्स= डाउन सिंड्रोम, जन्मजात हृदय रोग, गौचर रोग जैसी आनुवंशिक स्थितियां और खून के थक्के जमने का पारिवारिक इतिहास, पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) का जोखिम बढ़ा सकते हैं।

जीवनशैली की आदतें= धूम्रपान और गैर-कानूनी नशीली दवाओं के इस्तेमाल से दिल और फेफड़ों को नुकसान पहुँच सकता है, जिससे सूजन हो सकती है और फेफड़ों में दबाव बढ़ सकता है।

दवाएं= कैंसर और डिप्रेशन की कुछ दवाएं फेफड़ों की रक्त वाहिकाओं को प्रभावित कर सकती हैं और पल्मोनरी हाइपरटेंशन का जोखिम बढ़ा सकती हैं।

लिंग= पुरुषों की तुलना में महिलाओं में पल्मोनरी हाइपरटेंशन (PH) होने की संभावना ज़्यादा होती है, खासकर हार्ट फेलियर या अज्ञात कारणों (इडियोपैथिक) से होने वाले मामलों में; ऐसा शायद हार्मोन या ऑटोइम्यून बीमारियों के कारण हो सकता है।

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता लगाना

पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता लगाना मुश्किल होता है क्योंकि इसके लक्षण दिल या फेफड़ों की दूसरी बीमारियों जैसे ही होते हैं। पल्मोनरी हाइपरटेंशन का पता लगाने के लिए नीचे दिए गए तरीके अपनाए जाते हैं=

मरीज़ की मेडिकल हिस्ट्री

शारीरिक जांच

शुरुआती नॉन-इनवेसिव टेस्ट:-

ब्लड टेस्ट (दूसरी वजहों का पता लगाने के लिए)

इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम (ECG या EKG)

चेस्ट X-रे

मुख्य स्क्रीनिंग टेस्ट

ट्रांसथोरेसिक इकोकार्डियोग्राफी

अतिरिक्त डायग्नोस्टिक टेस्ट

P.T.O

विधिक सलाहकार अमित आनन्द तिवारी (अधिवक्ता उच्चतम न्यायालय)
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक आरजू खान द्वारा सीता आफसेट, 75 पुराना किला केन्ट रोड हुसैनगंज लखनऊ से मुद्रित कराकर एच 615 मलेसेमऊ गोमतीनगर विस्तार लखनऊ उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक आरजू खान मोबाइल: 09415282000 फोन नं. 0522-2968200 RNI No: UPHIN/2016/67528 Email: statementttodaynews@gmail.com
AgencyChannel: www.statementtodaynews.com
राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र में प्रकाशित लेखक के विचार व्यक्तिगत हैं किसी भी प्रकार के विवाद के समाधान के लिए न्यायक्षेत्र लखनऊ होगा। (समाचार पत्र में सभी पद अवैतनिक है)

टीईटी अनिवार्यता के मुद्दे पर शिक्षकों ने सांसद को सौंपा ज्ञापन

बांदा,संवाददाता। जिले के बबेरू में शिक्षक साथियों ने टीईटी अनिवार्यता के मुद्दे पर माननीय सांसद श्रीमती कृष्णा देवी शिवशंकर पटेल को एक ज्ञापन सौंपा। यह ज्ञापन शिक्षकों की मांगों को सरकार तक पहुँचाने के उद्देश्य से दिया गया। ज्ञापन में टीईटी लागू होने से पूर्व नियुक्त शिक्षकों की सेवा सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की गई है। इसके साथ ही, उनके अधिकारों की रक्षा के लिए संबंधित सरकार तक उनकी आवाज प्रभावी ढंग से पहुँचाने का आग्रह किया गया। शिक्षकों का मानना है कि उनका सम्मान और उनके अधिकारों की रक्षा गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था के लिए अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने इस विषय पर सकारात्मक और न्यायपूर्ण निर्णय की अपेक्षा व्यक्त की।

युवक ने खेत में बने मुर्गी फार्म में फांसी लगाकर आत्महत्या की

बाँदा,संवाददाता। जिले के मरका थाना क्षेत्र के कुमेढ़ा गांव में एक 25 वर्षीय युवक ने अपने खेत में बने मुर्गी फार्म में फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय भेज दिया है। घटना मरका थाना क्षेत्र के कुमेढ़ा गांव की है। गांव निवासी नरेंद्र कुशवाहा के 25 वर्षीय पुत्र पुष्पेंद्र कुमार ने शुक्रवार मध्य रात्रि अपने खेत पर बने मुर्गी फार्म के छप्पर की धन्नी से रस्सी के सहारे फांसी लगा ली। इस घटना का पता तब चला जब मृतक का भाई धर्मेंद्र देर रात बाँदा से घर लौटा। धर्मेंद्र ने घर पहुंचने के बाद पुष्पेंद्र को फोन किया, लेकिन फोन रिसीव नहीं हुआ। इसके बाद वह खेत स्थित मुर्गी फार्म पहुंचा। वहां बिस्तर खाली देखकर उसने आसपास तलाश की, तो पुष्पेंद्र फांसी के फंदे पर लटका मिला। धर्मेंद्र ने तत्काल परिजनों को इसकी सूचना दी। घटना की जानकारी मिलने पर गांव में सनसनी फैल गई। मृतक पुष्पेंद्र अपने तीन भाइयों और चार बहनों में चौथे नंबर पर था। परिजनों ने सुबह स्थानीय पुलिस को घटना की सूचना दी। सूचना मिलने के बाद मरका थाना पुलिस और फॉरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर जांच–पड़ताल की और आवश्यक साक्ष्य जुटाए। पुलिस ने शव को फंदे से उतारकर पंचायतनामा की कार्रवाई पूरी की और पोस्टमार्टम के लिए जिला मुख्यालय बाँदा भेज दिया।

लंग फंक्शन टेस्ट (फेफड़ों की कार्यक्षमता की जांच)
स्लीप स्टडी (नींद की जांच)
एक्सरसाइज टेस्ट
एडवांस्ड इमेजिंग
कंप्यूटेड टोमोग्राफी (CT) स्कैन
कार्डियोवैस्कुलर मैग्नेटिक रेजोनेंस (CMR)
वेंटिलेशन/परफ्यूजन (V/Q) स्कैन
पुष्टि करने वाला टेस्ट
राइट हार्ट कैथीटेराइजेशन
खास टेस्ट (ज़रूरत पड़ने पर)
जेनेटिक टेस्टिंग
लंग बायोप्सी
पल्मोनरी हाइपरटेंशन का इलाज

हालांकि पल्मोनरी हाइपरटेंशन को पूरी तरह ठीक नहीं किया जा सकता, लेकिन इलाज से इसके लक्षणों को कम करने और स्थिति को बेहतर ढंग से संभालने में मदद मिल सकती है। पल्मोनरी हाइपरटेंशन के इलाज के विकल्प इस प्रकार हैं־

PH का बिना दवा वाला इलाज
खान–पान में बदलाव
जीवनशैली में बदलाव
ऑक्सीजन थेरेपी
PH का दवा से इलाज

टारगेटेड थेरेपी־ एंडोथेलिन रिसेप्टर एंटागोनिस्ट, फॉस्फोडिएस्टरेज़ टाइप–5 इनहिबिटर, प्रोस्टासाइक्लिन एनालॉग और रिसेप्टर एगोनिस्ट और सॉल्युबल गुआनिलेट साइक्लेज स्टिमुलेटर

कैल्शियम चैनल ब्लॉकर
डाययुरेटिक्स
एंटीकोआगुलंट्स
PH का सर्जिकल इलाज
पल्मोनरी एंडार्टरेक्टॉमी
बलून एंजियोप्लास्टी
बलून एट्रियल सेप्टोस्टॉमी
फेफड़े का प्रत्यारोपण (लंग ट्रांसप्लांटेशन)

किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी (KGMU), लखनऊ का पल्मोनरी और क्रिटिकल केयर मेडिसिन विभाग, 8 और 9 अगस्त 2०26 को चत्तरूके शताब्दी फ़ेज़–2 अस्पताल के 8वीं मंज़िल के ऑडिटोरियम में PH समिट लखनऊ 2०26 – पल्मोनरी हाइपरटेंशन पर इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस% आयोजित कर रहा है। 卐एडवांसिंग डायग्नोसिस, थेराप्यूटिक्स एंड आउटकम्स卐 (निदान, इलाज और नतीजों को बेहतर बनाना) थीम वाली इस दो–दिवसीय कॉन्फ्रेंस में देश–विदेश के जाने–माने एक्सपर्ट्स पल्मोनरी हाइपरटेंशन के निदान और मैनेजमेंट में हुई नई तरक्की पर चर्चा करेंगे। यह विभाग पल्मोनरी हाइपरटेंशन वाले मरीज़ों की पूरी जांच और इलाज में सक्रिय रूप से शामिल है, खासकर उन मरीज़ों के मामले में जिन्हें क्रोनिक लंग डिज़ीज़ (फेफड़ों की पुरानी बीमारी) और इंटरस्टिशियल लंग डिज़ीज़, पल्मोनरी आर्टेरियल हाइपरटेंशन और क्रोनिक थ्रोम्बोएम्बोलिक पल्मोनरी हाइपरटेंशन जैसी बीमारियां हैं। मरीज़ों की व्यवस्थित जांच के लिए पल्मोनरी फ़ंक्शन टेस्टिंग, इकोकार्डियोग्राफी, एडवांस्ड इमेजिंग और दूसरी जांचें की जाती हैं, और ज़रूरत पड़ने पर कार्डियोलॉजी, रुमेटोलॉजी, रेडियोडायग्नोसिस और दूसरी स्पेशलिटीज़ के साथ मिलकर काम किया जाता है। विभाग गंभीर रूप से बीमार मरीज़ों (जिन्हें पल्मोनरी हाइपरटेंशन क्राइसिस और राइट वेंट्रिकुलर फ़ेलियर की समस्या हो) के लिए खास देखभाल भी देता है। साथ ही, यह विभाग इस बीमारी की जल्दी पहचान, सही रिस्क स्ट्रैटिफ़िकेशन (जोखिम का आकलन) और सबूतों पर आधारित इलाज को बढ़ावा देता है, क्योंकि अक्सर इस बीमारी का पता देर से चलता है।

साइबर सुरक्षित एवं वित्तीय रूप से जागरूक उत्तर प्रदेश

अब्दुल बासिद खां

ब्यूरो, एसटी न्यूज़ ,लखनऊ- मुख्यमंत्री उ०प्र० के साइबर सुरक्षित एवं वित्तीय रूप से जागरूक उत्तर प्रदेश के संकल्प तथा पुलिस महानिदेशक, उ०प्र० के निर्देशो के क्रम में साइबर अपराधों की रोकथाम एवं जन–जागरूकता को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की जा रही है। उक्त क्रम में पुलिस महानिदेशक, साइबर क्राइम, उ०प्र० के निर्देशन में साइबर अपराधों से बचाव, सुरक्षित डिजिटल लेन–देन को प्रोत्साहित करने तथा नागरिकों में वित्तीय साक्षरता विकसित करने हेतु विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। जिसके दृष्टिगत आज दिनांक ०5.०8.2०26 को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (SEBI) के तत्वावधान में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) द्वारा उत्तर प्रदेश के साइबर मुख्यालय में एक वित्तीय साक्षरता एवं साइबर धोखाधड़ी जागरूकता कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम हाइब्रिड मोड में आयोजित किया गया, जिसमें साइबर मुख्यालय, साइबर पुलिस थानों एवं साइबर सेल के वरिष्ठ अधिकारी एवं कर्मी भौतिक रूप से उपस्थित रहे, जबकि उत्तर प्रदेश के विभिन्न साइबर सेल एवं साइबर पुलिस थानों के अधिकारी वेब–आधारित प्लेटफॉर्म के माध्यम से वर्चुअल रूप से जुड़े। मुख्य वक्तव्य मृदुल रस्तोगी, डिप्टी जनरल मैनेजर SEBI द्वारा दिया गया, जिसमें उन्होंने आज के डिजिटल युग में वित्तीय साक्षरता एवं साइबर सुरक्षा के बढ़ते महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने साइबर–सक्षम वित्तीय धोखाधड़ी की बढ़ती जटिलता, ठगों द्वारा अपनाई जाने वाली सामान्य कार्यप्रणाली तथा नागरिकों द्वारा अपनाए जाने वाले निवारक उपायों पर विस्तार से चर्चा की। इस पहल का आयोजन एवं समन्वय सीएस श्रुति शर्मा, प्रभारी, एनएसई उत्तर प्रदेश क्षेत्र – नियामक विभाग द्वारा किया गया, जो एनएसई की निरंतर निवेशक जागरूकता पहलों का हिस्सा है। यह कार्यक्रम वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देने, साइबर धोखाधड़ी के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा सरकारी एजेंसियों को एक वित्तीय रूप से जागरूक एवं साइबर–सुरक्षित समाज के निर्माण में सहयोग देने की एनएसई की निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाता है। कार्यक्रम में साइबर मुख्यालय, साइबर पुलिस थानों एवं साइबर सेल के अधिकारियों एवं कर्मियों की उत्साहपूर्ण भागीदारी देखी गई, जिसने SEBI, NSE एवं उत्तर प्रदेश पुलिस की वित्तीय एवं साइबर धोखाधड़ी के विरुद्ध जन–जागरूकता बढ़ाने की सामूहिक प्रतिबद्धता को और सुदृढ़ किया।

कांवड़ियों का विशाल जनसैलाब उमड़ा

बस्ती,संवाददाता। सावन के पवित्र महीने में राम जानकी मार्ग पर कांवड़ियों का विशाल जनसैलाब उमड़ पड़ा है। भगवान शिव का जलाभिषेक करने के लिए बड़ी संख्या में शिवभक्त कंधे पर कांवड़ लेकर अपने गंतव्य की ओर बढ़ रहे हैं। पूरा राम जानकी मार्ग इन दिनों भक्तिमय माहौल में डूबा हुआ है। भगवा रंग में सजे शिवभक्तों के जत्थे बोल बम और हर हर महादेव के जयकारे लगाते हुए आगे बढ़ रहे हैं, जिससे पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो रहा है। सुबह से ही कांवड़ियों के जत्थे लगातार राम जानकी मार्ग से गुजर रहे हैं। कुछ भक्त पैदल यात्रा कर रहे हैं, जबकि कुछ अपने साथियों के साथ कांवड़ लेकर शिवधाम की ओर प्रस्थान कर रहे हैं। शिवभक्तों में उत्साह और श्रद्धा का अद्भुत संगम देखने को मिल रहा है। कांवड़ियों ने बताया कि वे हर साल इसी मार्ग से जल लेने जाते हैं और बाबा भद्रेश्वर नाथ को जल अर्पित करते हैं।

खुद पर फायरिंग की झूठी सूचना देने वाला गिरफ्तार

बस्ती,संवाददाता। बस्ती पुलिस ने एक ऐसे व्यक्ति को गिरफ्तार किया है जिसने अपने पड़ोसियों को फंसाने के लिए खुद पर फायरिंग की झूठी सूचना दी थी। आरोपी रामजन्म वर्मा ने डायल–112 पर यह फर्जी जानकारी दी थी। पुलिस ने उसकी निशानदेही पर घटना में प्रयुक्त अवैध देसी पिस्टल भी बरामद की है। यह मामला 5 अगस्त 2026 की रात करीब 11 बजे का है, जब रामजन्म वर्मा ने डायल–112 पर सूचना दी कि उसके पड़ोसी उमेश और कृष्ण कुमार ने उसके दरवाजे पर जान से मारने की नीयत से पिस्टल से फायरिंग की है। सूचना मिलते ही परसरामपुर पुलिस तत्काल मौके पर पहुंची और घटना की जांच शुरू की। पुलिस ने घटनास्थल से संबंधित साक्ष्य जुटाए और परिवारजनों व अन्य संबंधित व्यक्तियों के बयान दर्ज किए। जांच और पूछताछ के दौरान पुलिस को प्राप्त तथ्यों और साक्ष्यों में विरोधाभास मिला। गहन पूछताछ करने पर रामजन्म वर्मा ने स्वीकार किया कि उसने अपने पड़ोसियों उमेश और कृष्ण कुमार को एक गंभीर मुकदमे में फंसाने के इरादे से अपने दरवाजे पर खुद फायरिंग की थी और विपक्षियों के खिलाफ झूठी सूचना दी थी। आरोपी रामजन्म वर्मा (उम्र करीब 29 वर्ष, निवासी ग्राम करमिया, थाना परसरामपुर) की निशानदेही पर पुलिस ने एक .32 बोर की देसी पिस्टल बरामद की। उसे 8 अगस्त 2026 को सुबह करीब 08.45 बजे कोहरायें तिराहे के पास से गिरफ्तार किया गया।